

देश विदेश की लोक कथाएँ — एक कहानी कई रंग-4 :



तीन सन्तरे जैसी कहानियाँ



संकलनकर्ता
सुषमा गुप्ता

Book Title: Teen Santarey Jaisi Kahaniyan-4 (Three Oranges Like Stories-4)

Cover Page picture : Three Oranges

Published Under the Auspices of Akhil Bhartiya Sahityalok

E-Mail: sushmajee@yahoo.com

Website: www.sushmajee.com/folktales/index-folktales.htm

Read More such stories at: www.scribd.com/sushma_gupta_1

Copyrighted by Sushma Gupta 2018

No portion of this book may be reproduced or stored in a retrieval system or transmitted in any form, by any means, mechanical, electronic, photocopying, recording, or otherwise, without written permission from the author.

Map of the World



विंडसर, कॅनेडा

मार्च 2018

Contents

सीरीज़ की भूमिका	4
तीन सन्तरे जैसी कहानियाँ	5
1 तीन सन्तरोँ से प्यार	7
2 प्यार के तीन सन्तरे	25
3 तीन मुनहरे सन्तरे	35
4 जिप्सी रानी	35
5 तीन अनारों से प्यार	53
6 एक छोटा चरवाहा	74
7 जादुई खीरे	74
8 कबूतर पालतू कैसे बना	85

सीरीज़ की भूमिका

लोक कथाएँ किसी भी समाज की संस्कृति का एक अटूट हिस्सा होती हैं। ये संसार को उस समाज के बारे में बताती हैं जिसकी वे लोक कथाएँ हैं। आज से बहुत साल पहले, करीब 100 साल पहले, ये लोक कथाएँ केवल ज़बानी ही कही जाती थीं और कह सुन कर ही एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को दी जाती थीं इसलिये किसी भी लोक कथा का मूल रूप क्या रहा होगा यह कहना मुश्किल है।

आज हम ऐसी ही कुछ अंग्रेजी और कुछ दूसरी भाषा बोलने वाले देशों की लोक कथाएँ अपने हिन्दी भाषा बोलने वाले समाज तक पहुँचाने का प्रयास कर रहे हैं। इनमें से बहुत सारी लोक कथाएँ हमने अंग्रेजी की किताबों से, कुछ विश्वविद्यालयों में दी गयी थीसेज़ से, और कुछ पत्रिकाओं से ली हैं और कुछ लोगों से सुन कर भी लिखी हैं। अब तक 1200 से अधिक लोक कथाएँ हिन्दी में लिखी जा चुकी हैं। इनमें से 400 से भी अधिक लोक कथाएँ तो केवल अफ्रीका के देशों की ही हैं।

इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि ये सब लोक कथाएँ हर वह आदमी पढ़ सके जो थोड़ी सी भी हिन्दी पढ़ना जानता हो और उसे समझता हो। ये कथाएँ यहाँ तो सरल भाषा में लिखी गयी हैं पर इनको हिन्दी में लिखने में कई समस्याएँ आयी हैं जिनमें से दो समस्याएँ मुख्य हैं।

एक तो यह कि करीब करीब 95 प्रतिशत विदेशी नामों को हिन्दी में लिखना बहुत मुश्किल है चाहे वे आदमियों के हों या फिर जगहों के। दूसरे उनका उच्चारण भी बहुत ही अलग तरीके का होता है। कोई कुछ बोलता है तो कोई कुछ। इसको साफ करने के लिये इस सीरीज़ की सब किताबों में फुटनोट्स में उनको अंग्रेजी में लिख दिया गया है ताकि कोई भी उनको अंग्रेजी के शब्दों की सहायता से कहीं भी खोज सके। इसके अलावा और भी बहुत सारे शब्द जो हमारे भारत के लोगों के लिये नये हैं उनको भी फुटनोट्स और चित्रों द्वारा समझाया गया है।

ये सब कथाएँ “देश विदेश की लोक कथाएँ” नाम की सीरीज़ के अन्तर्गत छपी जा रही हैं। ये लोक कथाएँ आप सबका मनोरंजन तो करेंगी ही साथ में दूसरे देशों की संस्कृति के बारे में भी जानकारी देंगी। आशा है कि हिन्दी साहित्य जगत में इनका भव्य स्वागत होगा।

सुषमा गुप्ता

मई 2018

तीन सन्तरे जैसी कहानियाँ

हमने एक नयी सीरीज़ शुरू की है “एक कहानी कई रंग”। इसमें वे कथाएँ शामिल की गयीं हैं जो सुनने में एक सी लगती हैं पर अलग अलग जगहों पर अलग अलग तरीके से कही सुनी जाती हैं।

बच्चों जैसे तुम लोग कहानियाँ सुनते हो वैसे ही दूसरे देशों में भी वहाँ के बच्चे कहानियाँ सुनते हैं। क्योंकि कहानियाँ हर समाज की अलग अलग होती हैं इसलिये उन बच्चों की कहानियाँ भी तुम्हारी कहानियों से अलग हैं।

पर कुछ कहानियाँ ऐसी भी हैं जो भिन्न भिन्न देशों में कही सुनी जाती हैं पर सुनने में एक सी लगती हैं। यहाँ कुछ ऐसी ही कहानियाँ दी जा रही हैं। ये सब कहानियाँ कुछ इस तरह से चुनी गयीं हैं कि ये सब कहानियाँ एक सी कहानियों की श्रेणी में रखी जा सकती हैं। ऐसी बहुत सी कहानियाँ हैं। इन पुस्तकों की पहली कहानी वह कहानी है जो बहुत लोकप्रिय कहानी है उसके बाद ही फिर उसकी जैसी और कहानियाँ दी गयीं हैं। ऐसी कहानियाँ हम “एक कहानी कई रंग” की सीरीज़ के अन्तर्गत प्रकाशित कर रहे हैं। अगर इन कहानियों के अलावा भी तुम और कोई ऐसी कहानी जानते हो तो हमें जरूर लिखना। हम उसको इसके अगले आने वाले संस्करण में शामिल करने का प्रयास करेंगे।

इन कहानियों की सीरीज़ में सबसे पहली पुस्तक थी “बिल्ला और चुहिया जैसी कहानियाँ”¹। अब तक इस सीरीज़ में तीन पुस्तकें प्रकाशित कर चुके हैं। इन सब पुस्तकों के नाम इस पुस्तक के पीछे दिये हुए हैं।

“एक कहानी कई रंग-1” में “बिल्ला और चुहिया” जैसी कहानियाँ हैं जिनमें कोई एक किसी से कोई काम कराना चाहता है पर वह उस काम को तब तक नहीं करता जब तक उसकी अपनी शर्त पूरी नहीं हो जाती सो उसको उसकी शर्त पूरी करने के लिये उसे कहीं और जाना पड़ता है। और यह कड़ी तब तक चलती रहती है जब तक उसका अपना काम नहीं हो जाता।²

इसकी दूसरी पुस्तक में “टैम थम्ब” जैसी कहानियाँ दी गयीं हैं। इसमें बहुत छोटे बच्चे की करामातों की कथाएँ हैं।³

इस सीरीज़ की तीसरी पुस्तक “छह हंस” जैसी कुछ कहानियों का संग्रह है जिसकी कहानियों की हीरोइन एक छोटी लड़की, साधारणतया सबसे छोटी बहिन, होती है जो अपने दो या चार या सात भाइयों को पक्षी या जानवर बन जाने के शाप से छुटकारा दिलाती है। ये सब कहानियाँ बहिन भाई के प्यार की कहानियाँ हैं।⁴

उसी कड़ी की अब यह चौथी पुस्तक प्रकाशित की जा रही है जिसमें कुछ ऐसी लोक कथाओं का संग्रह है जो “तीन सन्तरे” लोक कथा से मिलती जुलती हैं। इस चौथी पुस्तक में फलों या सब्जियों में से लड़कियाँ निकलती हैं। ज्यादातर ये कहानियाँ यूरोप के देशों में कही सुनी जाती हैं पर आश्चर्यजनक रूप से इनमें एक लोक कथा अफ्रीका के ज़िम्बाब्वे देश की और एक लोक कथा दक्षिणी अमेरिका के ब्राज़ील देश की भी है।

हमें विश्वास है कि ऐसी कहानियों का यह संग्रह भी तुम लोगों को पिछले तीन संग्रहों की तरह से बहुत पसन्द आयेगा।

¹ “One Story Many Colors-1 – “Cat and Rat” Like Stories

² “One Story Many Colors-1” – like “Cat and Rat”

³ “One Story Many Colors-2” – like “Tom Thumb”

⁴ “One Story Many Colors-3” – like “Six Swans”

1 तीन सन्तरों से प्यार⁵

तीन सन्तरे की यह लोक कथा यूरोप महाद्वीप के इटली देश की एक बहुत ही लोकप्रिय और पुरानी लोक कथा है। आओ देखते हैं कि तीन सन्तरों से प्यार कैसे होता है।

पैन्टेलून⁶ जोकर अपनी ऊँची आवाज में बोला — “आओ आओ सब लोग यहाँ आ कर इकट्ठे हो जाओ। अभी हम एक बहुत ही अच्छा नाटक खेलने जा रहे हैं।”

एक ने पूछा — “यह किस तरह का नाटक है? क्या यह हँसी वाला नाटक है? यह नाटक जितना हँसाने वाला होगा उतना ही ज्यादा अच्छा होगा।” यह सुन कर कई लोगों ने हॉ में अपने सिर हिलाये।

पर किसी ने कहा — “अगर कोई दुख भरा नाटक भी है तो वह भी क्या बुरा है? हम उनका रोना ही सुन लेंगे।”

पैन्टेलून ने सबको चुप कराने की कोशिश की — “चुप हो जाओ, चुप हो जाओ। मैं तुम लोगों से वायदा करता हूँ कि यह नाटक अपने में एक अकेला और बहुत ही बढ़िया नाटक होगा।

⁵ The Love For Three Oranges – a story adapted from the book “The Love for Three Oranges”, by Sergei Prokofiev. Grimm Press. 2006. 30 p. A 1-story picture book.

Because this book is based on a play that is why some dramatic effect may be seen.

[It is a famous Italian fairy tale written by Giamattista Basile in the Pentamerone. It may be found with the title “The Three Citrons”. It has a variant too – “The Love of Three Pomegranates”.]

⁶ Pentaloon is the clown

ऐसा नाटक तुम लोगों ने पहले कभी कहीं नहीं देखा होगा। सो अब हम पेश करते हैं आज का नाटक तीन सन्तरों से प्यार।”

एक बूढ़ा बोला — “तीन सन्तरों से प्यार? इसका क्या मतलब हुआ?” पर वहाँ बैठे बच्चों को यह नाम अच्छा लगा और उन्होंने जोर से ताली बजायी।

वे चिल्लाये — “हमको तीन सन्तरों से प्यार चाहिये। हमको तीन सन्तरों से प्यार चाहिये।”

जोकर को यह सुन कर बड़ा अच्छा लगा कि बच्चे उसका नाटक देखने के लिये उत्सुक हैं।

उसने उनके सामने सिर झुकाया और बोला — “बच्चों, तुम लोग तो हमेशा से ही मेरे बहुत अच्छे नाटक देखने वालों में से रहे हो। अच्छा अब देखो नाटक शुरू होता है और राजा आने वाला है।”

और सचमुच में ही एक राजा वहाँ आ गया बहुत ही बढ़िया कपड़े पहने। पर वह तो बहुत ही चिन्तित दिखायी दे रहा था। यह चिन्ता तो उसकी चटकीली रंगीन पोशाक से बिल्कुल भी मेल नहीं खा रही थी।

ऐसा इसलिये था क्योंकि वह अपने बेटे राजकुमार के बारे में बहुत चिन्तित था। उसने पूछा — “मेरे राजकुमार को क्या हुआ है?”

क्या राजकुमार के पेट में दर्द है? या फिर उसके सिर में दर्द है? या फिर उसकी कमर में दर्द है? या उसके हाथ या पैर में दर्द है?

उसकी आँखें खाली खाली दिखायी देती हैं और वह एक शब्द भी नहीं बोलता। दुनिया भर के सैंकड़ों डाक्टरों ने उसको देख लिया और सब एक ही निश्चय पर पहुँचे हैं कि उसको हँसना चाहिये। पर भगवान जानता है कि मेरा बेटा बेचारा तो कभी हँसा ही नहीं।”

राजा बेचारा एक गहरी साँस ले कर रह गया। फिर वह उस जोकर की तरफ घूम कर बोला — “पैन्टेलून, तुम ही इसका कुछ उपाय करो।”

पैन्टेलून ने सलाह दी कि राजा को अपने दरबार के हँसोड़िये ट्रुफ़ालडीनो⁷ को बुलाना चाहिये जिसका काम ही सबको हँसाना और सबका दिल बहलाना था।

उसके चुटकुले और उसकी बेवकूफी की बातें शायद राजकुमार को हँसा सकें। यह सलाह सुन कर राजा ने अपने दरबारियों को हुकुम दिया कि वे ट्रुफ़ालडीनो को ढूँढ कर लायें।

जब ट्रुफ़ालडीनो मिल गया तो सारे देश के लोग उसके शो का इन्तजार करने लगे। इस बीच चैलियो जादूगर और फ़ैटा मौरगैना जादूगरनी⁸ ने भी उसके शो की तैयारी करने में काफी सहायता की।

⁷ Truffaldino jester

⁸ Chelio wizard and Fata Morgana witch – Fata Morgana witch is a famous witch of Italy. She is mentioned in several other stories also. She is famous character of Italian folktales.

चैलियो को शक था कि फ़ैटा मोरगैना जादूगरनी⁹ जरूर ही कुछ गड़बड़ चाल चलेगी इसलिये वह गहरी अँधेरी घाटी की तरफ चल पड़ा जहाँ वह बूढ़ी जादूगरनी रहती थी।

वह यह सोच रहा था कि वह उसको इस बात के लिये तैयार कर लेगा कि वह अपनी चाल न खेले। पर जब वह फ़ैटा मोरगैना के पास पहुँचा तो फ़ैटा मोरगैना ने चैलियो का एक भेदभरी मुस्कान के साथ स्वागत किया।

उसने पूछा — “तुम मुझे यह बताने के लिये यहाँ किस अधिकार से आये हो कि मैं क्या करूँ और क्या न करूँ?”

बात करते करते उसने अपनी ताश की गड्डी उठा ली और बोली — “क्या तुम फ़ैटा मोरगैना के ताश का पत्ता खींचने की हिम्मत कर सकते हो? अगर कर सकते हो तो करो। पर देखना कि अगर मैं हार गयी तो फिर जो तुम कहोगे मैं वही करूँगी।”

यह कह कर उसने ताश का एक पत्ता जादूगर को दिया और एक खुद लिया। एक पल बाद ही वह पागलों की तरह अपना पत्ता हिलाते हुए खुशी से बोली — “हा हा हा। हुकुम की रानी। अब तुम अगर अपना पत्ता दिखा सकते हो तो दिखाओ।”

चैलियो हार गया था। फ़ैटा खुशी से बोली — “मैं जीत गयी, मैं जीत गयी।” और ऐसा कहते हुए वह महल की तरफ भाग गयी।

⁹ Feta Morgana is a witch

उधर दरबार के हँसोड़िये टुफ़ालडीनो ने राज्य के सारे जोकरों को इकट्ठा कर रखा था। और वह तो बस क्या ही बढ़िया शो था।

मजाकिया चेहरे और कपड़े पहन कर सब लोग मंच पर इधर से उधर घूम रहे थे जिससे कि सारे देखने वाले हँसी से दोहरे हुए जा रहे थे। हँसते हँसते उनकी आँखों से उनके गालों पर आँसू बहे जा रहे थे।

पर अफसोस राजकुमार ऐसे ही बैठा था। इतनी सब हँसी की चीजें होते हुए भी राजकुमार का चेहरा वैसा ही पीला और उदास रहा।

क्योंकि हर आदमी राजकुमार को हँसाने की इतनी कोशिश कर रहा था कि उनमें से किसी ने देखा ही नहीं कि फ़ैटा मौरगैना कब महल में खिसक आयी।

बहुत ऊँची एड़ी के जूते पहने वह राजकुमार की तरफ चली जा रही थी जैसे वह उसे बहुत करीब से देखना चाहती थी।

इतने में उसका ध्यान बँटा और वह अपने स्कर्ट की झालर में अटक कर राजकुमार के सामने गिर गयी। उसके हाथ पैर सब तरफ फैल गये। उसकी पोशाक के नीचे पहना हुआ उसका धारी वाला निकर भी सबको दिखायी देने लगा।

कमरे में बैठे सारे लोग इस सबको देख कर पहले तो आश्चर्य में पड़ गये पर फिर ज़ोर ज़ोर से हँसने लगे।

पर पता है क्या हुआ? वह आदमी जो सबसे ज़्यादा ज़ोर से हँसा वह कौन था? वह था राजकुमार।

पर क्या वह सचमुच राजकुमार ही था जो हँसा था? उसकी तो हँसी इतनी ज़्यादा थी कि उसको तो साँस लेने का भी मौका नहीं मिल रहा था। वह तो बस उस अजीब सी हालत में पड़ी जादूगरनी को देखे जा रहा था जो उसके सामने पड़ी थी और हँसे जा रहा था।

“यह तो सबसे अजीब निकर होगा जो दुनियाँ में पहले कभी किसी ने देखा होगा।”

यह देख कर जादूगरनी का चेहरा शर्म से लाल पड़ गया। जब वह लाल पड़े चेहरे वाली जादूगरनी उठने की कोशिश कर रही थी तो उसने गुस्से से राजकुमार की तरफ इशारा करके कहा — “फ़ैटा मौरगैना पर हँसने की तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई? मैं अभी तुमको सबक सिखाती हूँ तब तुमको अपनी इस हरकत पर अफसोस होगा।

यह कह कर उस बूढ़ी जादूगरनी ने शाप के कुछ शब्द बुड़बुड़ाने शुरू किये तो महल के उस कमरे में बैठे सब डर गये और डर के मारे एकदम चुप हो गये।



जब फ़ैटा मौरगैना ने अपना जादू राजकुमार पर डाला तो सबकी आँखें राजकुमार पर ठहर गयी — “मैं तुम्हें हुकुम देती हूँ कि तुम तीन सन्तरों के प्रेम में पड़ जाओ।”

जैसे ही उसने ये शब्द कहे राजकुमार बोल पड़ा — “मैं तीन सन्तरों को प्यार करता हूँ, मैं तीन सन्तरों को प्यार करता हूँ।”



अपने शाप को काम करते देख कर सन्तुष्ट होते हुए उसने राजकुमार की तरफ देखा और फिर अपना हाथ हिलाया जिससे उसका अपना राक्षस नौकर एक बहुत बड़ी

धोंकनी¹⁰ खिसकाता हुआ वहाँ ले आया।

उस धोंकनी से उसने एक बड़ा सा हवा का झोंका फेंका और उस झोंके से वह राजकुमार और वह हँसोड़िया टुफ़ालडीनो दोनों ही उस कमरे से बाहर जा पड़े – दूर कहीं बहुत दूर किसी दूसरे देश में।

राजकुमार और हँसोड़िया दोनों ही अपने होश खो चुके थे और उनको यह भी नहीं पता था कि वे थे कहाँ। वे एक जलते हुए रेगिस्तान में पड़े थे।

जब वे दोनों यह पता लगाने की कोशिश कर रहे थे कि उत्तर किधर है और दक्षिण किधर है, पूर्व किधर है और पश्चिम किधर है तभी वह चैलियो जादूगर वहाँ प्रगट हो गया।

जादूगर चैलियो राजकुमार और टुफ़ालडीनो को यह बताने आया था कि वे इस शाप से कैसे आजाद हो सकते थे। चैलियो ने

¹⁰ Translated for the words “A pair of bellows” – a pair of bellows is a device constructed to furnish a strong blast of air. The simplest type consists of a flexible bag comprising a pair of rigid boards ...

बताया कि जिन तीन सन्तरों के प्रेम में राजकुमार पड़ गया है वे तीनों सन्तरे एक किले में रखे हैं और वह किला एक रेगिस्तान के बीच में है।

एक डरावना राक्षस उन सन्तरों की रात दिन रखवाली करता है। यह राक्षस दुनियाँ के सबसे ज़्यादा लम्बे पेड़ से भी ज़्यादा लम्बा है और अफ्रीका के तीन हाथियों से भी ज़्यादा ताकतवर है।

यह राक्षस खाना बनाने के पीछे पागल है। अगर कोई अनजाने में भी उसके पास चला जाये तो वह रसोई के चाकू से उस आने वाले को बिना किसी वजह के खच खच करके तुरन्त ही बहुत छोटे छोटे टुकड़ों में काट देता है।

जब राजकुमार और टुफ़ालडीनो ने उन सन्तरों की खोज में जाने का यह भयानक हाल सुना तो वे बहुत डर गये।

पर जादूगर चैलियो ने अपने कपड़ों की आस्तीन के अन्दर से जादू की एक छड़ी निकाली जिसके एक सिरे पर पाँच अलग अलग रंगों के रिबन लगे हुए थे। वे सारे रिबन एक घंटी के बजने पर हवा में नाच उठते थे जो उस जादू की छड़ी में लगी हुई थी।

जादूगर चैलियो ने उनको तसल्ली दी और कहा — “जब तक तुम इस जादू की छड़ी से उस राक्षस का ध्यान बँटा सकते हो तब तक तुम लोगों को उन सन्तरों को लेने की चिन्ता करने की कोई जरूरत नहीं है।

और इस जादू की छड़ी से तुम उतनी देर तक उस राक्षस का ध्यान उन सन्तरों पर से हटा सकते हो जितनी देर में तुम उनको वहाँ से ले कर भाग सकते हो।”

फिर उसने उनको चेतावनी दी कि इस बात का ध्यान रखना कि अगर तुम उन सन्तरों को लेने में कामयाब हो जाओ तो उनको पानी के पास ही तोड़ना।

जादूगर चैलियो से वह जादू की छड़ी ले कर वे दोनों उस किले को ढूँढने चले। जल्दी ही उनको वह किला मिल गया। हिम्मत बटोरते हुए वे दोनों उस किले में दबे पाँव दाखिल हुए।

पाँच सात मिनट में ही उन्होंने उस राक्षस रसोइये को ढूँढ लिया। उनको देखते ही वह उन पर गरजा — “आहा, क्या ही बहादुर लोग आज मेरी रसोई में आये हैं। तुम लोग ठीक समय पर आये हो। मुझे अपना सूप बनाने के लिये बहुत अच्छा माँस चाहिये था। अब मैं तुम्हारे माँस से अपना सूप बनाऊँगा।”

राजकुमार ने जल्दी में तुरन्त ही जादू की वह छड़ी हिला दी। तुरन्त ही वह राक्षस उस छड़ी के हिलते हुए रिबनों और बजती हुई घंटी से अपने होश खो बैठा और उस जादू की छड़ी की तरफ देखता ही रह गया।

ट्रुफ़ालडीनो तुरन्त ही उस राक्षस के पास से गुजरा और बिजली की सी तेज़ी से वहाँ रखे उसके तीनों सन्तरे उठा लिये और उनको अपनी जेब में डाल लिया।

सन्तरे अपनी जेब में डालने के बाद उसने राजकुमार की बाँह खींची और बोला — “चलो चलो, जल्दी चलो।” और फिर बिजली की सी तेज़ी से ही वे दोनों उस किले के बाहर निकल कर अपनी जान बचा कर भाग लिये।

जब वे अपने घर जाने वाले रास्ते पर आये तो अचानक ही उन सन्तरों में कुछ बदलाव आने लगा। वे सन्तरे साइज़ में बड़े होते जा रहे थे। ऐसा लग रहा था जैसे कि वे ज़िन्दा हों।

कुछ ही देर में वे इतने बड़े हो गये कि वे टुफ़ालडीनो की जेब से निकल कर सड़क पर नीचे लुढ़कने लगे। और अब वे इतने बड़े हो गये थे कि राजकुमार और टुफ़ालडीनो दोनों को उन लुढ़कते हुए सन्तरों को पकड़ कर रखने में बड़ी ताकत लगानी पड़ रही थी।

सूरज की कड़ी धूप से नीचे रेगिस्तान की रेत बुरी तरह से जल रही थी। टुफ़ालडीनो थकान और प्यास की वजह से उन सन्तरों को वहीं छोड़ने को तैयार था।

वह बोला — “चलो, इन सन्तरों को भूल जाओ। हम इनको यहीं छोड़े देते हैं।” हालाँकि राजकुमार भी उतना ही थका और प्यासा था पर फिर भी वह उन सन्तरों को छोड़ने के लिये तैयार नहीं था क्योंकि उसके वे प्यारे सन्तरे छोड़ जाने के लायक थे ही नहीं।

वह तो जादूगरनी फ़ैटा मौरगैना के शाप के असर में था इसलिये वह उन सन्तरों को बहुत प्यार करता था।

वह थोड़ा रुक कर बोला — “हम इनको यहाँ इस तरह अकेले नहीं छोड़ सकते।”

फिर उसने एक पल के लिये कुछ सोचा और बोला ऐसा करते हैं कि हम थोड़ी देर के लिये यहाँ कहीं आराम कर लें फिर चलेंगे। ऐसा कह कर वह सन्तरों के साये में ही लेट गया और सो गया।

पर टुफ़ालडीनो तो सारा पसीने से भीगा हुआ था। वह गुस्से से में बुड़बुड़ाया — “इस भट्टी में कोई कैसे सो सकता है? मुझे तो ऐसा लग रहा है जैसे मैं इस गरमी में ज़िन्दा ही भुन रहा हूँ। मैं तो गरमी में भुन भुन कर चमड़ा हो गया हूँ, पानी कहाँ से लाऊँ?”

यह कह कर उसने उन परेशान करने वाले सन्तरों की तरफ देखा तो एक अजीब सा विचार उसके मन में आया। और उस विचार के साथ ही वह हँस पड़ा जैसे उसने कोई बड़ा इनाम जीत लिया हो।

अपने विचार पर खुश हो कर उसने अपने आपसे कहा — “मैं बस एक सन्तरा खा लूँ। वही मुझे इस गरमी और प्यास से बचाने के लिये काफी रहेगा।”

उस समय दरबार के उस हँसोड़िये की निगाहों में वे तीन बड़े और पके सन्तरे किसी शाही पकवान से कम नहीं थे।

वह धीरे से एक सबसे पास वाले सन्तरे के पास गया जिसके पीछे राजकुमार लेटा हुआ सो रहा था और उस सन्तरे को छीलना शुरू कर दिया।

पौप । उसका छिलका तो हाथ लगाते ही अपने आप फट गया और उसमें से रसीला गूदा नहीं बल्कि एक सुन्दर सी राजकुमारी बाहर निकल कर आ गयी और उस सन्तरे का छिलका जमीन पर चारों तरफ बिखर गया । वह राजकुमारी टुफ़ालडीनो की तरफ देख रही थी ।

बाहर निकलते ही वह राजकुमारी बोली — “ओ भले आदमी, मेहरबानी करके मुझे पानी दो वरना मैं प्यास से मर जाऊँगी ।”

टुफ़ालडीनो जो कुछ अभी उसकी आँखों के सामने हुआ था उसको देखते हुए आश्चर्यचकित होता हुआ बोला — “मगर मेरे पास तो पानी नहीं है ।”

सो उस राजकुमारी की प्यास बुझाने के लिये पानी पाने के लिये जल्दी में उसने दूसरा सन्तरा छील दिया ।

पौप । पहले सन्तरे की तरह से इस सन्तरे का छिलका भी अपने आप ही फट गया और इसमें से भी एक राजकुमारी निकल आयी और इस सन्तरे का छिलका भी जमीन पर चारों तरफ बिखर गया ।

इस राजकुमारी ने भी बाहर निकल कर कहा — “ओ भले आदमी, मेहरबानी करके मुझे पानी दो वरना मैं प्यास से मर जाऊँगी ।”

अब तो टुफ़ालडीनो को इस बात का बिल्कुल भी अन्दाजा नहीं था कि वह इस मुसीबत से कैसे छुटकारा पाये । वह यह सोच ही

रहा था कि वह क्या करे कि इतने में वे दोनों राजकुमारियाँ मर कर जमीन पर गिर पड़ीं।

वह हँसोड़िया टुफ़ालडीनो रो पड़ा और चिल्लाया — “ओह मेरे भगवान, मेरी सहायता करो। यह सब कैसे हो गया? मुझे यह सब क्यों देखना पड़ा?”

मैं तो एक सादा सा शाही हँसोड़िया हूँ जिसका काम लोगों को हँसाना है। मैं तो ऐसी मौत देखने के लिये पैदा नहीं हुआ था। और कोई दूसरा भी ऐसी चीज़ का सामना कैसे कर सकता था। मुझे यहाँ से चले जाना चाहिये और आज जो कुछ भी यहाँ हुआ है उसे भूल जाना चाहिये।”

और यह कह कर वह वहाँ से खोये हुए बच्चे की तरह रोता हुआ भाग लिया।

टुफ़ालडीनो के रोने की आवाज सुन कर और जो कुछ भी उसके आस पास हो रहा था उसको महसूस करके राजकुमार की आँख खुल गयी। उसने पूछा — “यह सब यहाँ क्या हो रहा है?”

और जैसे ही उसने दो मरी हुई राजकुमारियों को अपने से कुछ गजों की दूरी पर जमीन पर पड़े देखा तो वह तो बहुत ही डर गया।

वह अपने आपसे ही बोला — “हे भगवान। दो मरी हुई राजकुमारियाँ? किसी ने मुझे कभी सिखाया ही नहीं कि इस दशा में मुझे क्या करना चाहिये। अब यह राजकुमार क्या करे?”

डरे हुए और प्यासे राजकुमार ने तीसरे और आखिरी सन्तरे की तरफ देखा तो उसका रस पीने के लिये उसके मुँह से लार टपकने लगी।

आखिर जब उससे नहीं सहा गया तो वह अपने प्यारे सन्तरे को छीलने पर मजबूर हो गया। पौप। उस सन्तरे का छिलका भी अपने आप फट कर खुल गया और उसमें से एक तीसरी राजकुमारी बाहर निकल आयी।

बाहर निकल कर वह राजकुमारी बोली — “मेरा नाम निनेटा¹¹ है। मुझे थोड़ा पानी चाहिये।”

राजकुमारी को देख कर राजकुमार का दुखी चेहरा खुशी से खिल उठा। वह बोला — “तुम इतनी सुन्दर हो कि मैं तो तुमको देखते ही प्यार करने लगा हूँ। क्या तुम मुझसे शादी करोगी?”

राजकुमारी बोली — “हाँ, मैं तुमसे शादी करूँगी पर मैं तुमसे इस पोशाक में शादी नहीं कर सकती। तुम पहले महल जाओ और मेरे लिये मेरे पहनने लायक कपड़े ले कर आओ।”

राजकुमार खुश हो कर बोला — “अच्छा तुम यहीं मेरा इन्तजार करो मैं तुम्हारे लिये शाही कपड़े ले कर अभी आता हूँ।” और यह कह कर वह अपने महल की तरफ भाग गया।

राजकुमार को जाये हुए अभी बहुत देर नहीं हुई थी कि रेगिस्तान की चिलचिलाती हुई धूप और उसकी गरमी से वह सूखी

¹¹ Ninetta – name of the girl appearing from the orange

हुई राजकुमारी धीरे धीरे सुकड़ने लगी जैसे किसी सन्तरे का रस निकल जाने के बाद सन्तरा निचुड़ा हुआ सा दिखायी देता है।

तभी अचानक एक जादू सा हुआ और उस जादू से हँसोड़ियों का एक समूह पानी से भरे हुए बरतन और बालटियाँ लिये हुए उसको बचाने के लिये वहाँ प्रगट हो गया। वहाँ आ कर उन्होंने उसको पानी पिलाया।

उसे पानी पिला कर वे हँसोड़िये वहाँ से चले गये। लेकिन जैसे ही वे हँसोड़िये वहाँ से गये कि फैंटा मौरगैना ने दोबारा वहाँ आने का विचार किया और हवा के एक झोंके के साथ वह वहाँ आ पहुँची।

वह बोली — “हूँह, मुझे खुशी का अन्त¹² अच्छा नहीं लगता। राजकुमार को तो कपड़े मिल ही चुके हैं। वह और राजा और उनका शाही जुलूस बस किसी समय भी आता ही होगा। तो मुझे कोई और तरीका सोचना पड़ेगा जिससे कि मैं उनकी खुशियाँ रोक सकूँ।”

और उसने अपना कोई बुरा जादू डालने के लिये कुछ बुड़बुड़ाना शुरू कर दिया। देखते देखते वह राजकुमारी एक चूहे में बदल गयी। फिर उसने अपने उसी नौकर राक्षस को राजकुमारी के कपड़े पहना दिये और उसको वहाँ खड़ा कर दिया।

¹² Translated for the words “Happy ending”

जब महल से वह शाही जुलूस आया तो राजा जिसने असली राजकुमारी को पहले कभी देखा नहीं था उस जादूगरनी के जादू के धोखे में आ गया और फैंटा मौरगैना के नौकर राक्षस को ही वह राजकुमारी समझ बैठा जिसके लिये राजकुमार शाही कपड़े ले कर आया था।

पर राजकुमार जानता था कि वहाँ कुछ तो था जो गड़बड़ था। वह चिल्लाया — “नहीं नहीं, यह राजकुमारी मेरी राजकुमारी निनैटा नहीं है। यह इतनी बदसूरत कैसे हो गयी?”

यह सुन कर राजा बोला — “हूँ, ऐसा ही सही कि यह वह नहीं है जिसको मैं सुन्दर कहूँगा पर अब तो तुमको इसी से शादी करनी पड़ेगी क्योंकि एक राजकुमार को तो अपना वायदा निभाना ही चाहिये।”

और फिर वह उस जादूगरनी के उस नौकर राक्षस की तरफ घूमा और बोला — “प्रिय राजकुमारी, अगर तुम्हारी इच्छा हो तो तुम हमारे साथ आओ।”

बेचारे राजकुमार के पास कोई और चारा नहीं था सिवाय इसके कि वह अपने पिता और अपनी होने वाली पत्नी के पीछे पीछे महल वापस जाता। वह बहुत दुखी था और अपने लिये बहुत पछता रहा था।

सब लोगों के पहुँचते ही महल में राजकुमार की शादी की तैयारियाँ होने लगीं। पर जैसे ही राजा अपने सिंहासन पर बैठने को

था कि ज़रा सोचो कि वहाँ उसके बैठने पहले उस सिंहासन पर क्या था? एक चूहा।

राजा चिल्लाया — “चूहा।”

जादूगर चैलियो ने उन सब लोगों को पीछे किया जिनकी चीखों की आवाज से सारा कमरा गूँज रहा था। वह जल्दी से उस चूहे को देखने के लिये उस चूहे के सामने आया।

उसने भी कुछ जादू के शब्द बड़बड़ाये और उसके जादू के असर से वह चूहा तो वहाँ से गायब हो गया और असली राजकुमारी निनैटा अपनी पूरी सुन्दरता के साथ वहाँ प्रगट हो गयी।

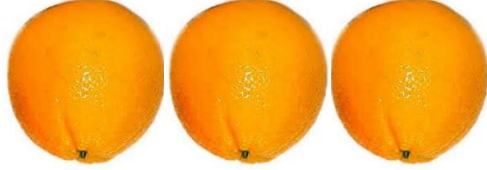
राजकुमार खुशी से चिल्ला पड़ा — “आखिर मुझे अपनी प्यारी राजकुमारी मिल ही गयी।”

आखिर में जादूगरनी फ़ैटा मौरगैना की चाल का सारा कच्चा चिड़ा खुल गया। वह और उसका नौकर राक्षस महल से ही नहीं बल्कि राज्य से भी बाहर निकाल दिये गये।

राजा ने राजकुमार की राजकुमारी से शादी करते हुए खुश हो कर सन्तुष्ट होते हुए कहा — “बहुत अच्छे, मुझे तो खुशी का अन्त ही अच्छा लगता है।”

खुशी के उस हल्ले गुल्ले में नाटक देखने वालों के सामने पैन्टैलून फिर प्रगट हुआ और बोला — “चाहे आँसू खुशी के हों या गम के, हम सब आगे बढ़ते रहते हैं। एक अच्छे नाटक का ऐसा

अन्त होना चाहिये जो एक दूसरे नाटक की शुरूआत को जन्म दे।
सो विदा। हम फिर मिलेंगे।”



2 प्यार के तीन सन्तरे¹³

तीन सन्तरे जैसी यह लोक कथा हमने तुम्हारे लिये यूरोप महाद्वीप के पुर्तगाल देश की लोक कथाओं से ली है।

एक बार की बात है कि पुर्तगाल के एक राजा को शिकार का बहुत शौक था। एक दिन वह शिकार खेलने जंगल में गया। वहाँ उसको एक बहुत दुखी बुढ़िया मिली। वह भूख से मरी जा रही थी।

उस राजकुमार के पास उसको देने के लिये उस समय पैसे तो नहीं थे पर उसके पास काफी सारा खाना था जो वह अपने महल से रास्ते में खाने के लिये लाया था।

उसने अपने नौकरों को बुलाया और उनको उस बुढ़िया को जो कुछ भी वह अपने साथ खाना ले कर आया था वह सब उसको देने के लिये कहा।

बुढ़िया ने खूब पेट भर कर खाया पिया और खाने पीने के बाद राजकुमार को बहुत धन्यवाद दिया। वह बोली कि वह उसको उसके बदले में कुछ और नहीं दे सकती थी क्योंकि उसके पास कुछ और था ही नहीं।

¹³ The Three Citrons of Love – a folktale from Portugal, Europe. Adapted from the Web Site : <http://www.surlalunefairytales.com/books/portugal/pedroso/threecitrons.html>



पर फिर भी उसके पास तीन सन्तरे थे जो उसने राजकुमार को दिये और उससे कहा कि वह किसी भी हालत में उनको न खोले और जब खोले तो किसी पानी की जगह के पास ही खोले और लम्बा लम्बा खोले, न कि चौड़ाई में।

राजकुमार ने उससे वे सन्तरे ले लिये उसको धन्यवाद दिया और फिर अपने रास्ते चल दिया।

कुछ दूर जाने पर राजकुमार को लगा कि उसको एक सन्तरा खोल कर देखना चाहिये कि उसमें क्या था। पर वह यह भूल गया कि उस बुढ़िया ने उसको वह सन्तरा पानी के पास खोलने के लिये कहा था।

जैसे ही उसने वह सन्तरा खोला उसमें एक बहुत सुन्दर लड़की निकली। सन्तरे में से निकलते ही उसने पीने के लिये पानी माँगा। उसने कहा कि अगर उसको पीने के लिये पानी नहीं मिला तो वह मर जायेगी।

अब राजकुमार के पास पानी तो था नहीं सो वह उसको पानी नहीं दे सका सो वह बेचारी लड़की मर गयी। राजकुमार को उसके मरने का बहुत दुख हुआ। पर क्योंकि उसके पास अभी दो सन्तरे और बचे थे इसलिये वह इस लड़की की मौत को झेल गया।

वह अपनी यात्रा पर और आगे बढ़ा। आगे चल कर उसने एक सन्तरा और खोला पर इस बार भी वह यह भूल गया कि उसको उसे पानी के पास खोलना था।

उसने जैसे ही दूसरा सन्तरा खोला उसमें से भी एक पहले से भी सुन्दर लड़की निकली। बाहर निकलते ही उसने भी राजकुमार से पानी माँगा पर राजकुमार के पास पहले की तरह से पानी नहीं था और इस तरह बिना पानी के पहले की तरह से वह लड़की भी मर गयी। अबकी बार राजकुमार को बहुत दुख हुआ।

पर वह फिर अपनी यात्रा पर आगे चल दिया। पर अबकी बार उसको तीसरा सन्तरा बिना पानी की जगह के खोलने की हिम्मत नहीं हुई कि कहीं ऐसा न हो कि इसमें से भी कोई लड़की निकले और वह भी बिना पानी के मर जाये।

पर उसको यह जानने की इच्छा बहुत ज़्यादा थी कि इस तीसरे सन्तरे में क्या हो सकता था सो उसने पानी ढूँढना शुरू किया ताकि उसके पास वह यह तीसरा सन्तरा खोल कर यह देख सके कि उसमें क्या था।

पानी मिलने पर उसने वह तीसरा सन्तरा खोल दिया। उसमें से भी एक लड़की निकली जो पहले वाली लड़कियों से कहीं ज़्यादा सुन्दर थी। उसने भी निकलते ही पानी माँगा। इस बार राजकुमार के पास पानी था सो उसने तुरन्त ही उसको पानी पिला दिया।

पर क्योंकि वह लड़की बहुत ही पतली और नाजुक सी थी राजकुमार उसको अपने साथ अपनी यात्रा पर आगे नहीं ले जा सकता था सो उसने महल लौटने का विचार किया।

उसने उससे पास के एक पेड़ पर चढ़ जाने के लिये कहा और खुद उसके लिये एक गाड़ी लाने चला गया। सो वह लड़की तो पेड़ पर चढ़ गयी और राजकुमार वहाँ से अपने महल चला गया।

कुछ देर बाद एक नीग्रो¹⁴ स्त्री जो बहुत ही बदसूरत थी अपने मालिक के लिये वहाँ पानी भरने आयी। उसने पानी में झाँका। पानी बहुत साफ और शान्त था। उस पानी में उसको उस सुन्दर लड़की की जो पेड़ पर बैठी थी परछाई दिखायी दी।

उसको लगा कि वह उसका खुद का चेहरा था सो वह कह उठी — “अरे तुम तो इतनी सुन्दर हो फिर तुम किसी का पानी क्यों भरती हो? तोड़ दो इस घड़े को।” और यह कह कर उसने उस घड़े को जमीन पर मार मार कर तोड़ दिया।

उधर पेड़ पर बैठी लड़की यह सब देख कर मुस्कुरा रही थी। केवल मुस्कुराना ही नहीं बल्कि वह तो जोर से हँसना भी चाह रही थी पर कहीं वह नीग्रो स्त्री उसको सुन न ले और देख न ले इस वजह से डर रही थी। पर फिर उससे रहा नहीं गया और वह जोर से हँस पड़ी।

¹⁴ Negro – African origin people are called Negro. Negro is a race. A Negro can be recognized easily.

उसकी हँसी की आवाज सुन कर उस नीग्रो स्त्री ने चारों तरफ देखा कि कौन हँसा पर उसको कोई दिखायी नहीं दिया। काफी देर के बाद उसको पेड़ पर बैठी वह लड़की दिखायी दी।

उसको देख कर उसने कई तरह के इशारों से उसको पेड़ से नीचे आने के लिये कहा पर उस लड़की ने यह कहते हुए उसको नीचे आने से मना कर दिया कि वह वहाँ राजकुमार का इन्तजार कर रही थी और वह तब तक नीचे नहीं आ सकती थी जब तक राजकुमार न आ जाये।

पर उस नीग्रो स्त्री ने जो एक जादूगरनी भी थी उसको फिर से नीचे आने की जिद की — “आओ तुम नीचे आ जाओ ताकि मैं कम से कम तुम्हारा मुँह तो साफ कर दूँ।”

उसने इतनी जिद की कि उस लड़की को पेड़ से नीचे उतरना ही पड़ा। उसके नीचे उतरते ही उस स्त्री ने उसको पकड़ लिया और उसका मुँह और सिर धोने का बहाना करने लगी।

उसने उससे बहुत सारे सवाल भी पूछे। उस लड़की ने उसके सब सवालों के सही सही जवाब दे दिये।

जब उस जादूगरनी को सब कुछ मालूम चल गया जो वह



जानना चाहती थी तो उसने अपने पास से एक पिन निकाली और उस लड़की के सिर में घुसा दी।

जैसे ही उसने वह पिन उसके सिर में घुसायी उसी समय वह लड़की एक फाख्ता बन गयी और उड़ गयी।

उसके बाद वह नीग्रो स्त्री उस लड़की की जगह उस पेड़ पर जा कर बैठ गयी और राजकुमार का इन्तजार करने लगी। इस सबके जल्दी ही बाद राजकुमार भी वापस आ गया।

उसने पेड़ के ऊपर देखा तो उसको बड़ा आश्चर्य हुआ कि वह तो वहाँ एक बहुत सुन्दर लड़की छोड़ कर गया था और वहाँ तो यह नीग्रो स्त्री बैठी हुई है।

वह उस पर बहुत गुस्सा हुआ तो वह नीग्रो स्त्री रोने लगी और बोली कि किसी ने उसके ऊपर एक ऐसा जादू कर दिया है जिससे वह कभी तो सुन्दर हो जाती है और कभी ऐसी नीग्रो जैसी हो जाती है।

राजकुमार ने उसके ऊपर विश्वास कर लिया और उसको पेड़ से नीचे उतरने के लिये कहा। फिर उसके ऊपर दया करके वह उसको घर ले आया।

अगले दिन वह सुबह सवेरे बहुत जल्दी उठा और अपने बागीचे में टहलने के लिये चला गया। कुछ देर बाद ही उसने एक सफेद फाख्ता देखी जो उसको बागीचे के माली से बात कर रही थी — “राजकुमार उस काली, बदसूरत और बुरी नीग्रो स्त्री के साथ कैसे अपने दिन गुजार रहे हैं?” और यह कह कर वह उड़ गयी।

माली ने उसको तो कोई जवाब नहीं दिया पर वह राजकुमार के पास पहुँचा और उससे यह सब कह कर उसके हाल चाल पूछे — “आप मुझसे उसे क्या जवाब दिलवाना चाहते हैं?”

राजकुमार बोला — “उसको कहना कि मैं ठीक हूँ और खुशी खुशी रह रहा हूँ।”

अगले दिन वह फाख्ता फिर वापस आयी और माली से बोली — “ओ मेरे बागीचे के माली, राजकुमार उस काली बदसूरत नीग्रो के साथ कैसे रह रहे हैं?”

माली ने कहा कि वह खुशी से रह रहे हैं और अच्छी ज़िन्दगी बिता रहे हैं।

इस पर वह फाख्ता बोली — “और मैं बेचारी दुनियाँ में बिना किसी काम के इधर उधर उड़ती फिर रही हूँ।” इस पर माली फिर से राजकुमार के पास गया और राजकुमार से जा कर वह कहा जो उस फाख्ता ने उससे कहा था।

तब राजकुमार ने माली को एक रिबन का जाल बिछाने के लिये कहा ताकि वह उस फाख्ता को उस जाल में फाँस कर पकड़ सके। क्योंकि वह उसको बहुत अच्छी लग गयी थी। माली ने उसको पकड़ने के लिये रिबन का जाल बिछाया।

अगले दिन वह फाख्ता फिर वहाँ आयी और उसने माली से फिर वही पूछा तो माली ने फिर वही जवाब दिया।

फिर उसने इधर उधर देखा तो खुद को फाँसने के लिये रिबन का जाल देख कर जोर से हँसी और बोली — “यह रिबन का जाल मेरी टाँगों को फाँसाने के लिये नहीं हो सकता।” और यह कह कर वह उड़ गयी।

माली फिर राजकुमार के पास गया और फाख्ता ने जो कहा था वह उससे जा कर कह दिया। अबकी बार राजकुमार ने उसको पकड़ने के लिये चाँदी के तारों का जाल बिछवाया। सो माली ने उसको पकड़ने के लिये इस बार चाँदी के तारों का जाल बिछाया।

अगले दिन वह फाख्ता फिर आयी और उसने माली से फिर वही कहा जो वह पहले से कहती चली आ रही थी और माली ने भी उसको वही जवाब दिया जो राजकुमार उससे कहलवाता चला आ रहा था।

फिर वह चाँदी के तारों का जाल देख कर बोली — “हा हा हा हा, यह चाँदी के तारों का जाल मुझे पकड़ने के लिये नहीं हो सकता।” और यह कह कर वह फिर उड़ गयी।

माली फिर राजकुमार के पास गया और उसको वह सब कुछ बताया जो फाख्ता ने उससे कहा था। इस बार राजकुमार ने उसको सोने के तारों का जाल बिछाने के लिये कहा। माली ने इस बार सोने के तारों का जाल बिछाया।

अगले दिन वह फाख्ता फिर आयी और उसने माली से फिर वही कहा जो वह पहले से कहती चली आ रही थी और माली ने भी उसको वही जवाब दिया जो राजकुमार उससे कहलवाता चला आ रहा था।

फिर वह सोने के तारों का जाल देख कर बोली — “हा हा हा हा, यह सोने के तारों का जाल मुझे पकड़ने के लिये नहीं हो सकता।” और यह कह कर वह फिर उड़ गयी।

माली फिर राजकुमार के पास गया और उसको वह सब कुछ बताया जो फाख्ता ने उससे कहा था। इस बार राजकुमार ने उसको हीरों का जाल बिछाने के लिये कहा। माली ने इस बार हीरों का जाल बिछाया।

अगले दिन वह फाख्ता फिर आयी। पर अबकी बार उसने इधर उधर नहीं देखा और उस जाल में आ कर फँस गयी और बोली — “हाँ, यह जाल मुझे पकड़ने के लिये ठीक है।” और इस तरह उस फाख्ता ने अपने आपको उस जाल में फँस कर पकड़वा लिया।

माली उस फाख्ता को पकड़ कर राजकुमार के पास ले गया। जैसे ही उस नीग्रो स्त्री ने देखा कि उसकी वह फाख्ता पकड़ी गयी वह राजकुमार से बोली कि वह अपने आपको बहुत बीमार महसूस कर रही थी और उस बीमारी को ठीक करने के लिये उसको फाख्ता का सूप चाहिये।

यह सुन कर राजकुमार ने कहा कि यह फाख्ता मारे जाने के लिये नहीं थी और वह उस फाख्ता को प्यार से सहलाने लगा। उसने उसके सिर पर हाथ फेरा तो उसको लगा कि उसके सिर में तो एक पिन घुसी हुई थी। उसने उस पिन को तुरन्त ही खींच कर बाहर निकाल दिया।

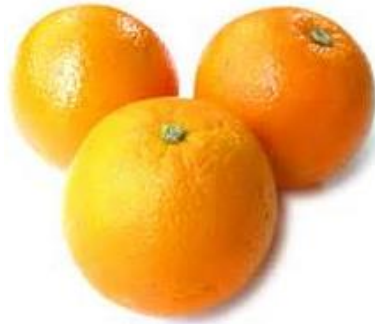
पिन के बाहर निकलते ही वह फाख्ता फिर से एक सुन्दर लड़की में बदल गयी और उसी शक्ल में आ गयी जिस शक्ल में राजकुमार उसको पेड़ पर चढ़ा कर गया था। उसको अचानक अपने सामने देख कर राजकुमार को बड़ा आश्चर्य हुआ।

तब उसने राजकुमार को वह सब बताया जो उस नीग्रो स्त्री ने उसके साथ किया था। यह सुनते ही राजकुमार ने उस नीग्रो स्त्री को मरवाने का हुकुम दे दिया।



मरने के बाद उस नीग्रो स्त्री की खाल का एक ढोल बनवा दिया गया और उसकी हड्डियों की सीढ़ियाँ बनवा दी गयीं जिनसे हो कर उसकी रानी अपने पलंग पर चढ़ती थी।

उसने उस लड़की से शादी कर ली और वे दोनों खुशी खुशी रहने लगे।



3 तीन सुनहरे सन्तरे¹⁵

तीन सन्तरे जैसी यह लोक कथा यूरोप महाद्वीप के स्पेन देश की लोक कथाओं से ली गयी है।

डूबता हुआ सूरज अपना सुनहरा साया एक सादे से कलई किये गये मकान पर पड़ रहा था कि उस समय तीन भाई सैनटियागो, टोमस और मैटियास¹⁶ खेतों से अपने घर की तरफ लौट रहे थे।

दोनों बड़े भाई आगे आगे जल्दी जल्दी चल रहे थे क्योंकि उनके पास ले जाने के लिये कोई बोझा नहीं था और उनका छोटा भाई उनके पीछे धीरे धीरे चल रहा था क्योंकि उसके कन्धे पर गेंहू की बालियाँ रखी हुई थीं।

जब वे तीनों घर पहुँचे तो उनकी माँ सैरा ने कहा — “बैठ जाओ बेटे और थोड़ा आराम कर लो। मैं तुम तीनों से कुछ बात करना चाहती हूँ।”

¹⁵ The Three Golden Oranges – a folktale from Spain, Europe. Adapted from the book : “The Three Golden Oranges”, by Almaflor Ada. NY, Atheneum Books for Young Readers. 1999. unnumbered 30 pages. A 1-story picture book.

its author writes – “As it has been said in Spanish “Colorin coloradoeste cuento se ha acabado” – this story entered by a silver path and exited through a golden road”. His story of popular Blancaflor, the youngest of the three sisters, who is bewitched and held prisoner inside an orange, has taken many forms over the time. In some versions Blancaflor is held by her own father for defying him, but her transformation into a dove and the presence of a straight pin in her hand. That is the key to disenchant. Matias removes it.

¹⁶ Santiago, Tomas and Matias – names of the three brothers

जब वे थोड़ी देर आराम कर चुके तो वह बोली — “मैं अब दादी बनना चाहती हूँ। इसलिये मैंने तय कर लिया है कि अब समय आ गया है जबकि तुम्हारे लिये लड़कियाँ ढूँढी जायें ताकि तुम लोग अपना परिवार शुरू कर सको। इसलिये तुम लोग अपने लिये तुरन्त ही लड़कियाँ ढूँढना शुरू कर दो।”

तीनों भाइयों ने कुछ सोचते हुए एक दूसरे की तरफ देखा। वे जानते थे कि सारी घाटी में जो पहाड़ों से ले कर समुद्र तक फैली हुई थी एक भी लड़की ऐसी नहीं थी जिसकी शादी न हुई हो।

जब वे अगले दिन खेतों पर गये तब भी यह मामला उनके दिमाग में घूम रहा था। मैटियास बोला — “क्यों न हम चल कर उस बुढ़िया से पूछें जो समुद्र के किनारे वाली पहाड़ी पर रहती है।”

मैटियास के आश्चर्य का ठिकाना न रहा जब उसके भाई उसकी कही बात पर राजी हो गये क्योंकि वे तो कभी उसकी बात सुनते भी नहीं थे।

तीनों भाई उस पहाड़ी पर जाने वाले तंग रास्ते पर चढ़ते चले गये जहाँ से समुद्र दिखायी देता था। वह बुढ़िया अपनी गुफा के सामने जहाँ वह रहती थी बैठी बैठी ऊन कात रही थी।

उसने अपना काम जारी रखते हुए उन भाइयों से पूछा — “कैसे आये हो?”

मैटियास ने सादे और नम्र तरीके से उसको बताया — “हम शादी करना चाहते हैं और इस बारे में हम आपसे सलाह लेने आये हैं।”

बुढ़िया ने पूछा — “और तुमको कैसी पत्नियाँ चाहिये?”

सैनटियागो तुरन्त बोला — “मुझको बहुत सुन्दर लड़की चाहिये।”

टोमस भी तुरन्त बोला — “मुझे ऐसी लड़की चाहिये जो अमीर हो और सुन्दर हो।”

बुढ़िया ने देखा कि मैटियास कुछ नहीं बोला तो उसने उसकी तरफ मुँह करके पूछा — “और तुम्हें?”

मैटियास बोला — “मुझे तो एक ऐसी जवान लड़की चाहिये जो दयालु हो, खुशमिजाज हो और ऐसी हो जिसको मैं बहुत प्यार कर सकूँ।”

बुढ़िया जवाब में बोली — “तुममें से हर एक को तुम्हारी पसन्द की लड़की मिल जायेगी पर तुम लोगों को इसके लिये एक साथ काम करना पड़ेगा।”

फिर वह एक नंगी ढालू जमीन जिसकी चोटी बादलों में छिपी हुई थी की तरफ इशारा करते हुए बोली — “तीन दिन तक तुम लोग उस पहाड़ी की तरफ जाओगे। उस पहाड़ी के दूसरी तरफ एक किला है जो सन्तरे के बाग से घिरा हुआ है।



उसमें सारे सन्तरे अभी हरे होंगे पर उनमें से एक पेड़ पर केवल एक शाख पर तुमको तीन सुनहरे सन्तरे लटके दिखायी देंगे।

वे तीनों सन्तरे तुम शाख को बिना कोई नुकसान पहुँचाये तोड़ लेना और तोड़ कर उनको मेरे पास ले आना तो तुमको अपनी

अपनी पसन्द की पत्तियाँ मिल जायेंगी। पर याद रखना अगर तुमने मेरी बात नहीं मानी तो पछताओगे।”



तीनों भाई अगले दिन के सफर की तैयारी करने के लिये जल्दी ही घर लौट आये। अगले दिन उन सबने अपनी अपनी जेबें गिरियों, खजूरों और डबल रोटियों¹⁷ से

भरीं और अपने सफर पर चल दिये।

वे सारे दिन चले। जब रात हुई तो रात काटने के लिये वे एक अनाज रखने वाली जगह में रुक गये। वहाँ वे एक भूसे का बिस्तर बना कर सो गये।

पर थोड़ी ही देर में सैनटियागो चाँद की एक किरन के अन्दर आने से जाग गया। वह किरन उस अनाजघर के दरवाजे से हो कर अनाजघर में आ रही थी।

¹⁷ Nuts (see their picture above), dates and bread

उसने अपने आपसे पूछा — “मैं यहाँ अपने भाइयों के साथ अपना समय क्यों बरबाद कर रहा हूँ? जब हमको सन्तरे मिलेंगे तो शायद हम लोग उनमें से सबसे अच्छा सन्तरा लेने के लिये लड़ें।

अगर मैं वहाँ सबसे पहले पहुँच जाता हूँ तो मैं उनमें से जो भी मुझे सबसे अच्छा सन्तरा लगेगा मैं वह सन्तरा ले लूँगा। फिर मेरे भाई लोग उन दो सन्तरों के ऊपर लड़ते रहें।”

यह सोच कर सैनटियागो उठा और सारी रात चलता रहा। तीसरे दिन सुबह सवेरे ही वह किले पर आ गया। तब तक सूरज की किरनें भी उस सन्तरे को बाग पर नहीं पड़ी थीं।

सन्तरे के सफेद फूल सुबह की रोशनी में चमक रहे थे। और जैसा उस बूढ़ी स्त्री ने कहा था सारे सन्तरे अभी भी हरे थे।

सैनटियागो उन सुनहरे सन्तरों की खोज में लग गया। तभी एक पेड़ की सुनहरी चमक ने उसका ध्यान खींचा जो किले के दरवाजे के पास लगा था।

वे तीनों सन्तरे पेड़ की सबसे ऊँची शाख पर असली सोने के सन्तरों की तरह चमक रहे थे। यह शाख बहुत ऊँची थी वह उस शाख तक नहीं पहुँच सकता था पर वह उनको छोड़ने वाला भी नहीं था।

उसने पेड़ को पकड़ा और यह देखने की कोशिश की कि वह उसको हिला कर वे सन्तरे तोड़ सकता था कि नहीं। पर उसके

आश्चर्य का ठिकाना न रहा जब उसने देखा कि उसका तो हाथ ही उस पेड़ के तने से चिपक गया। वह तो वहाँ फँस गया था।

उसी समय किले में से निकल कर एक बूढ़ा बहुत सारे चौकीदारों के साथ वहाँ आया। उसने अपनी जादू की छड़ी उस पेड़ से धीरे से छुआई और सैनटियागो को पेड़ से छुड़ा दिया। पर फिर उसको तुरन्त ही उन चौकीदारों ने पकड़ लिया और एक तहखाने में डाल दिया।

उस तहखाने से सैनटियागो ने सुना कि वह बूढ़ा अपने आपसे रो रो कर कह रहा था — “ओ मेरी प्यारी पत्नी, मेरी कीमती बेटियाँ। तुम कब तक इस तरह से कैद रहोगी?”

उधर अगले दिन टोमस और मैटियास सो कर उठे तो उन्होंने देखा कि सैनटियागो तो उनको धोखा दे कर भाग गया था। वे उठ कर अपने सफर पर चल दिये। उस दिन शाम को रात को ठहरने के लिये उनको पहाड़ी के एक तरफ एक गुफा मिली सो वे लोग वहीं ठहर गये।

जब मैटियास सो गया तो टोमस दबे पाँव उठा और यह सोच कर वहाँ से चल दिया — “सैनटियागो तो पहले ही चला गया है पर मैं उसको पकड़ लूँगा। मैं इस बेवकूफ मैटियास को यहीं छोड़ जाऊँगा फिर यह जो चाहे करे।”

तीसरे दिन दोपहर को टोमस किले पर पहुँच गया पर उसको सैनटियागो वहाँ कहीं नहीं दिखायी दिया। टोमस को वहाँ की सन्तरों की खुशबू बहुत ही अच्छी लगी।

उसने भी देखा कि जैसा कि उस बुढ़िया ने कहा था अभी सारे सन्तरे कच्चे थे। तभी उसकी निगाह किले के दरवाजे के पास लगे एक पेड़ पर पड़ी जिससे रोशनी निकल कर आ रही थी। वह उधर ही खिंचा चला गया।

वहाँ जा कर उसने देखा कि वह रोशनी तो उस पेड़ पर लगे तीन सुनहरी सन्तरों में से आ रही थी। उन सुनहरे सन्तरों को देख कर तो वह पागल सा हो गया और पेड़ की तरफ लपका। जैसे ही वह पेड़ पर चढ़ने के लिये पेड़ से लिपटा उसका सारा शरीर पेड़ से चिपक गया और वह तो हिल भी नहीं सका।

कुछ पल बाद ही वह पहले वाला बूढ़ा फिर वहाँ अपने चौकीदारों के साथ आया और अपनी जादू की छड़ी टोमस के शरीर से छुआ कर उसको पेड़ पर से छुड़ा लिया।

उसके चौकीदारों ने उसको भी ले जा कर उसी तहखाने में डाल दिया जहाँ उसका बड़ा भाई सैनटियागो पड़ा हुआ था।

इस बार दोनों ने उस बूढ़े को रोते हुए सुना — “ओ मेरी पत्नी, ओ मेरी कीमती बेटियों। एक भयानक जादूगर ने तुमको इस तरह कैद कर रखा है। कब आजाद होगी तुम?”

उधर अगले दिन जब मैटियास सो कर उठा तो उसने देखा कि टोमस भी उसको छोड़ कर भाग गया है। उसने सोचा कि अब उसको जल्दी करनी चाहिये क्योंकि उस समुद्र के किनारे वाली बुढ़िया ने कहा था कि सबको साथ साथ रहना।

फिर भी किले पर पहुँचते पहुँचते उसको तीसरे दिन का तीसरा पहर हो गया। उसको भी सन्तरों के फूलों की खुशबू आयी तो उनका पीछा करते करते वह भी उन सुनहरे सन्तरों के पेड़ के सामने आ पहुँचा।

उसने सोचा कि उसको वे सन्तरे जल्दी से तोड़ लेने चाहिये और फिर उसको अपने भाइयों को ढूँढना चाहिये। वह सन्तरे तोड़ने के लिये उछला और उछल कर वह शाख पकड़ ली जिस पर सन्तरे लगे हुए थे।

उसके पकड़ने से वह शाख टूट गयी और पेड़ चिल्ला उठा। उस पेड़ के चिल्लाते ही वह बूढ़ा आदमी अपने कई चौकीदारों के साथ एक बार फिर से बाहर आ गया।

वह बूढ़ा आदमी बोला — “तुमने तो सन्तरे पहले ही तोड़ लिये इसलिये अब मैं तुमको गिरफ्तार नहीं कर सकता।”

मैटियास ने पूछा — “मेरे भाई कहाँ हैं?”

बूढ़ा आदमी बोला — “ये सन्तरे सारे दरवाजे खोल देंगे। तुम केवल डबल रोटी और पानी ले लो और कुछ नहीं। और हाँ देखो

इन सन्तरों को कोई नुकसान नहीं पहुँचाना नहीं तो वे सारे दरवाजे बन्द हो जायेंगे।”

मैटियास किले की तरफ दौड़ा तो उस बूढ़े के कहे अनुसार किले के लोहे के भारी दरवाजे उसके आगे आगे अपने आप खुलते चलते गये।

किले के अन्दर किले की ऊँची ऊँची दीवारें बढ़िया परदों से ढकी हुई थीं। मैटियास का ध्यान एक खास परदे की तरफ गया जिसमें एक नौजवान लड़की एक घाटी में एक सन्तरे के बागीचे में खड़ी थी।

हालाँकि उसका मन वहाँ से हटने के लिये नहीं कर रहा था पर फिर भी वह अपने भाइयों की खोज जारी रखने के लिये वहाँ से आगे बढ़ा। आखिर उसने उनको पा ही लिया। उस तहखाने का दरवाजा जिसमें उसके भाई कैद थे अपने आप ही खुल गया था।

सैनटियागो और टोमस दोनों उसके सामने गिड़गिड़ाये —
“तुमको अकेला छोड़ने के लिये हमें माफ कर दो।”

मैटियास बोला — “अब इन सब बातों का कोई मतलब नहीं है। अब तो बस हमें इन सन्तरों को समुद्र के पास रहने वाली उस बुढ़िया के पास ले कर जल्दी ही पहुँचना चाहिये।”

सो सैनटियागो और टोमस उस किले की शान से प्रभावित होते हुए बेमन से मैटियास के पीछे पीछे हो लिये।

मैटियास बोला — “हमको किसी चीज़ को छूना नहीं है। सफर के लिये केवल डबल रोटी और पानी ले लो।”

पर जब वे मैटियास के पीछे किले के बाहर जा रहे थे तो उन्होंने अपनी जेबें जो भी सोने और चाँदी की चीज़ें उनके हाथ लगीं उनसे भर लीं।

मैटियास जल्दी जल्दी बिना खाने और पीने के लिये रुके चला जा रहा था। हालाँकि सूरज बहुत गरम था पर सन्तरे ताजा ही रहे।

पर इससे पहले कि वे किले से बहुत दूर पहुँचें मैटियास के दोनों भाइयों ने अपनी डबल रोटी पहले ही खा ली थी और अपना सारा पानी खत्म कर लिया था। उन्होंने यह भी नहीं सोचा कि सफर के अभी दो दिन और बचे हैं।

वह रात तीनों भाइयों ने एक चरवाहे की झोंपड़ी में बिताने का निश्चय किया पर सैनटियागो को रात भर नींद नहीं आयी।

वह इस बात से बहुत दुखी था कि उसका सबसे छोटा भाई वे सन्तरे ले कर जा रहा था जबकि वह सबसे बड़ा था और वह इस काम को नहीं कर सका।

सो आधी रात को वह उठा और अपने छोटे भाई के हाथ में लगी सन्तरों की शाख में से सबसे बड़ा सन्तरा तोड़ा और अपने सफर पर चल दिया।

सैनटियागो सारी रात चला और फिर अगली सारी सुबह चला । जल्दी ही सूरज जोर से चमकने लगा और सैनटियागो को प्यास लग आयी । उसको लगा कि वह तो प्यास के मारे मर ही जायेगा ।

जब वह प्यास और नहीं सह सका तो उसने वह रसीला सन्तरा खाने का निश्चय किया । पर जब उसने सन्तरे को बीच में से फाड़ा तो उसमें से एक बहुत ही सुन्दर जवान लड़की निकल पड़ी ।

सन्तरे में से निकलते ही उसने उससे डबल रोटी माँगी ।

सैनटियागो केवल यही कह सका — “डबल रोटी तो मेरे पास नहीं है वह तो मैंने सारी खा ली ।” फिर उसने उससे थोड़ा सा पानी माँगा ।

वह फिर बोला — “मैंने तो पानी भी सारा पी लिया ।”

“तो मैं अपने सन्तरे में वापस जाती हूँ और फिर अपने पेड़ में ।”

यह कह कर वह लड़की उसी सन्तरे में गायब हो गयी और फिर सन्तरा भी उसके हाथ से निकल कर गायब हो गया ।

उसके जाने के बाद बाद वह धूल के एक तेज़ तूफान में फँस गया । अचानक उसके चारों तरफ किले की दीवारें खड़ी हो गयीं ।

उसकी कुछ समझ में नहीं आ रहा था कि यह सब क्या हो रहा था । इतने में ही वे चौकीदार फिर से आ गये और उन्होंने उसको फिर से पकड़ कर उसी तहखाने में डाल दिया ।

इस बीच टोमस सुबह उठा। जब उसने देखा कि सैनटियागो एक सन्तरा ले कर वहाँ से गायब है तो उसने भी अपने बड़े भाई की देखा देखी वही करने की सोची।

उसने भी बचे हुए दो सन्तरों में से बड़ा वाला सन्तरा शाख पर से तोड़ा और वहाँ से चल दिया। मैटियास आराम से सोता रहा।

टोमस को भी पथरीला रास्ता और खूब गरम सूरज मिला। जब उससे भी वह गरमी नहीं सही गयी तो उसने भी मरने की बजाय सन्तरा खाना ज़्यादा अच्छा समझा।

जब उसने सन्तरा छीलना शुरू किया वह भी आश्चर्यचकित रह गया जब अचानक ही उसके सामने एक बहुत ही सुन्दर लड़की उसमें से निकल कर खड़ी हो गयी।

इतनी सुन्दर लड़की तो उसने पहले कभी देखी नहीं थी। उसके कीमती जवाहरातों और कपड़ों से लग रहा था कि वह बहुत अमीर थी।

निकलते ही उस लड़की ने उससे कहा — “मेहरबानी करके मुझे थोड़ी डबल रोटी दो।”

टोमस तो बस इतना ही बोल सका — “मेरे पास तो कोई डबल रोटी नहीं है। मैंने तो अपनी सारी डबल रोटी खा ली।”

वह लड़की फिर बोली — “तो फिर थोड़ा सा पानी ही दे दो।”

वह दुखी हो कर बोला — “मेरे पास तो वह भी नहीं है। मैंने तो वह भी सारा पी लिया।”

वह लड़की बोली — “तब मैं पहले अपने सन्तरे में और फिर अपने पेड़ में वापस जाती हूँ।” यह कह कर वह उस सन्तरे में गायब हो गयी और सन्तरा वापस पेड़ पर चला गया।

उसके गायब हो जाने के बाद टोमस ने भी अपने आपको धूल के तूफान में घिरा पाया। उसके चारों तरफ भी किले की दीवार खड़ी हो गयीं और वे चौकीदार उसको भी पकड़ कर उसी तहखाने में डाल आये जहाँ सैनटियागो पड़ा हुआ था।

जब मैटियास सुबह जागा तो उसने देखा कि उसकी शाख पर अब केवल एक ही सन्तरा रह गया है। वह अपने भाइयों के लिये बहुत दुखी हुआ। उसने सोचा कितने जल्दबाज हैं वे लोग।

डबल रोटी और पानी जो उसने बचा कर रखा था उसके सहारे मैटियास वह गरम सूखी घाटी पार कर गया। शाम तक वह समुद्र के पास और फिर उस बूढ़ी स्त्री की गुफा तक पहुँच गया।

वह बूढ़ी स्त्री बोली — “मैं देख रही हूँ कि तुम तो पूरी शाख की शाख ही तोड़ लाये हो और तुमने तीनों सन्तरों को अलग अलग कर दिया है।

क्योंकि तुमने मेरा कहा नहीं माना इसलिये इससे जो आफत आने वाली है उससे मैं तुममें से किसी को नहीं बचा पाऊँगी।”

मैटियास ने पूछा — “पर मेरी पत्नी का क्या होगा? और मेरे भाई?”

वह बूढ़ी स्त्री बोली — “अभी सब कुछ खत्म नहीं हुआ है। तुम अपने घर वापस जाओ और अपने खेतों पर जाओ। इन्तजार करो और हमेशा अपने दिल की सुनो।” इतना कह कर वह अपनी गुफा में चली गयी।

मैटियास दुखी हो कर अपने घर लौट आया और अपनी माँ को आ कर उसने अपने सफर का हाल और अपनी मुसीबतों के बारे में बताया।

हालाँकि सैरा अपने बड़े बेटों के गायब हो जाने के बारे में सुन कर बहुत दुखी हुई पर वह मैटियास को वापस आया देख कर खुश भी थी।



हर सुबह जब मैटियास खेतों पर चला जाता तो एक सफेद फाख्ता आ कर सैरा के कन्धे पर बैठ जाती जैसे वह उसको तसल्ली दे रही हो।

जब सैरा अपने घर का काम करती रहती तो वह फाख्ता उसके साथ सारा दिन रहती। इससे सैरा को ऐसा लगता कि सब कुछ ठीक हो जायेगा।

एक सुबह जब गरमियाँ खत्म हो रही थीं तो मैटियास खेत छोड़ कर जल्दी ही घर आ गया और माँ से बोला — “माँ मैं एक बार फिर से उस किले पर जाना चाहता हूँ जहाँ में पहले गया था। मैं जा कर देखता हूँ कि मैं अपने बड़े भाइयों को वहाँ फिर से पा सकता हूँ या नहीं।”

फिर उसकी निगाह उस फाख्ता पर जा कर ठहर गयी जो उसकी माँ के कन्धे पर बैठी हुई थी।

उसने माँ से पूछा — “माँ यह फाख्ता कहाँ से आयी?”

माँ बोली — “यह तो मेरे पास रोज आती है और जब तुम खेतों पर होते हो तो यह सारा दिन मेरे साथ ही रहती है। मैं इसको ब्लैनक्विटा¹⁸ कह कर पुकारती हूँ।”

मैटियास ने अपना हाथ बढ़ाया तो वह फाख्ता उसके हाथ पर आ कर बैठ गयी। वह उसके ऊपर प्यार से हाथ फेरने लगा तो उसने उसकी गरदन में एक काँटा सा चुभा हुआ महसूस किया।

उसने वह काँटा बड़ी सावधानी से खींच कर निकाल दिया तो वह फाख्ता तो एक लड़की बन गयी।

वह लड़की बोली — “मेरा नाम ब्लैन्काफ्लोर¹⁹ है” हम लोगों को यहाँ से तुरन्त ही चलना चाहिये। हमारे पास समय नहीं है। मैं खुद तुम्हारे साथ उस किले तक चलूँगी।”

सो वे दोनों किले की तरफ चल दिये। इस बार वहाँ तक का सफर मैटियास को बहुत छोटा लगा।

जब वे दोनों किले की तरफ जा रहे थे तो ब्लैन्काफ्लोर ने मैटियास को बताया कि कैसे उसकी दो बहिनें और माँ और वह खुद भी एक नीच जादूगर के शाप में जकड़ी हुई थीं क्योंकि उसके पिता

¹⁸ Blanquita – name of the dove

¹⁹ Blancaflor – name of the princess

ने अपनी किसी भी लड़की की शादी उससे करने से मना कर दिया था।

वह लड़की आगे बोली — “यह तो स्त्री का अधिकार है न कि वह किसी से भी शादी करे जिससे उसका मन करे। क्या तुम ऐसा नहीं सोचते?”

मैटियास की समझ में नहीं आया कि वह उसको उसकी इस बात का क्या जवाब दे जो वह उसको चुन ले।

जब वे उस सन्तरे के बाग में पहुँच गये तो उन्होंने देखा कि बाग के सारे सन्तरे पक गये हैं पर ब्लैन्काफ्लोर मैटियास को सीधे उसी पेड़ के पास ले गयी जिस पेड़ की शाख वह पहले तोड़ कर लाया था। वहाँ अब दो सन्तरे लटके हुए थे।

मैटियास ने ब्लैन्काफ्लोर को ऊपर उठाया ताकि वह उस शाख तक पहुँच सके। ब्लैन्काफ्लोर ने सावधानी से वे दोनों सन्तरे तोड़ लिये और उनको घास पर रख दिया।

जैसे ही उसने उनको घास पर रखा वे दोनों दो लड़कियों में बदल गये। ये दोनों लड़कियाँ ब्लैन्काफ्लोर की बहिनें थीं। उसी समय वह बूढ़ा भी किले में से बाहर आ गया और अपनी तीनों बेटियों को देख कर बहुत खुश हुआ।

इतने में वह पेड़ भी हिला और सबकी आँखों के सामने देखते देखते वह एक स्त्री बन गया। तीनों बहिनें चिल्लायीं “माँ”।

उस बूढ़े आदमी ने भी अपनी पत्नी को गले से लगाया और अपनी बेटियों को उनके दोनों गालों पर चूमा।

ब्लैन्काफ्लोर बोली — “मेरे माता पिता से मिलो और मेरी बहिनों से – जैनाइडा और ज़ोराइडा²⁰।”

मैटियास बोला — “अब मुझे अपने भाइयों को ढूँढना है।”

बूढ़े ने किले के दरवाजे की तरफ इशारा करते हुए कहा — “अब किले के सारे दरवाजे खुले हैं तुम अन्दर जा सकते हो।”

मैटियास ने देखा कि उसके भाई सैनटियागो और टोमस दोनों उस किले के दरवाजे में से बाहर चले आ रहे हैं।

मैटियास और ब्लैन्काफ्लोर दोनों ने दोनों भाइयों को नमस्ते की पर जब सैनटियागो ने जैनाइडा से पूछा कि क्या वह उससे शादी करेगी तो उसने जवाब दिया — “एक बेवकूफ बेकार के आदमी से शादी करने की बजाय तो मैं अकेला रहना ज़्यादा पसन्द करूँगी।”

और जब टोमस ने ज़ोराइडा से पूछा कि क्या वह उससे शादी करेगी तो उसने भी यही कहा — “मैं किसी बेवकूफ लालची आदमी से शादी करने की बजाय अकेला रहना ज़्यादा पसन्द करूँगी।” इसलिये महल में केवल एक ही शादी हुई।

शादी के बाद मैटियास और ब्लैन्काफ्लोर दोनों अपने उस सफेद घर को लौट आये जो समुद्र के पास था जहाँ की खिड़कियों के

²⁰ Zenaida and Zoraida – names of the two elder sisters out of the three daughters of the King



पत्थरों पर उन्होंने जिरेनियम के फूलों से भरे गमले रखे और सैरा का दिल खुशियों से भर दिया ।

किसी को नहीं पता कि सैनटियागो और टोमस का क्या हुआ पर अगर हमें उनके बारे में कुछ भी पता चला तो हम तुम लोगों को उनके बारे में जरूर बतायेंगे ।



4 जिप्सी रानी²¹

तीन सन्तरे जैसी यह लोक कथा हमने तुम्हारे लिये उत्तरी अमेरिका के मैक्सिको देश²² की लोक कथाओं से ली है।

बहुत दिन पहले की बात है कि मैक्सिको में एक राजा रहता था। उसका एक बेटा था।

यह राजकुमार जब शादी के लायक हुआ तो उसने अपने माता पिता से कहा कि वह दुनियाँ की सबसे सुन्दर लड़की से शादी करना चाहता है इसलिये उसको ढूँढने को लिये वह दुनियाँ घूमने जा रहा है।

सो वह राजकुमार राजमहल छोड़ कर दुनियाँ घूमने चल दिया और चलते चलते एक फव्वारे के पास आ पहुँचा। वहाँ वह पानी पीने के लिये रुका।



जैसे ही वह पानी पीने के लिये झुका तो उसको उस पानी में तीन सन्तरोँ की परछाईँ दिखायी दी तो उसने ऊपर की तरफ देखा। उसने देखा कि एक पेड़ की डाली पर तीन सन्तरे लगे हुए थे।

²¹ The Gypsy Queen (La Reina Mora) – a folktale from Mexico, Central America.

Translated from <http://www.g-world.org/magictales/reina.html>

Adopted, retold and written by Srita. Angela Ruiz

See also "The Three Citrons," Day V, tale 9. RS Boggs has edited a small collection of Spanish tales in the book "Three Golden Oranges? Tale I is a variation of "La Reina Mora." Boggs, in his Index of Spanish Folktales, also refers to other variants on pp. 54, 55, 57, and 58..]

²² Mexico – a country just South of the USA.

राजकुमार ने सोचा ये सन्तरे कितने मीठे और रसीले दिखायी देते हैं मैं इनको तोड़ लेता हूँ सो वह उस पेड़ पर चढ़ गया और उसने वे तीनों सन्तरे तोड़ लिये ।

उसने पहले एक सन्तरा छीला और तोड़ा तो उसमें से एक बहुत सुन्दर लड़की निकली । निकलते ही वह राजकुमार से बोली मुझे रोटी चाहिये ।

राजकुमार बोला — “मैं तुमको रोटी नहीं दे सकता क्योंकि मेरे पास रोटी है ही नहीं ।”

वह लड़की बोली — “तो मैं अपने सन्तरे में वापस जाती हूँ ।” कह कर वह लड़की उस सन्तरे में वापस चली गयी और वह सन्तरा फिर से साबुत हो गया ।

राजकुमार ने दूसरा सन्तरा छील कर तोड़ा तो उसमें से भी एक लड़की निकली जो पहली लड़की से भी ज़्यादा सुन्दर थी । उसने भी सन्तरे में से निकल कर रोटी माँगी तो राजकुमार बोला — “मैं तुमको रोटी नहीं दे सकता क्योंकि मेरे पास रोटी है ही नहीं ।”

वह लड़की बोली — “तो मैं अपने सन्तरे में वापस जाती हूँ ।” कह कर वह लड़की भी उस सन्तरे में वापस चली गयी और वह सन्तरा भी फिर से साबुत हो गया ।

अब उस राजकुमार की समझ में कुछ कुछ आया तो उसने सोचा कि तीसरा सन्तरा तोड़ने से पहले उसको कहीं से रोटी ले लेनी चाहिये ताकि ऐसा न हो कि तीसरे सन्तरे में से निकल कर वह

लड़की भी रोटी माँगे और रोटी न मिलने की वजह से वह भी सन्तरे में गायब हो जाये।

वह राजकुमार अभी यह सब सोच ही रहा था कि वहाँ से एक जिप्सी गाड़ी में बैठा गुजर रहा था। उसको देख कर वह राजकुमार चिल्लाया — “नमस्ते। मुझे एक रोटी दे दो मैं तुमको उसके लिये एक सोने का सिक्का दूँगा।”

उस जिप्सी ने जल्दी से अपनी गाड़ी से उतर कर राजकुमार को रोटी दे दी। अब राजकुमार ने खुशी से सन्तुष्ट होते हुए तीसरा सन्तरा छीला और तोड़ा।

उसमें से भी पहले की तरह एक लड़की निकली। यह लड़की पहली दो लड़कियों से भी ज़्यादा सुन्दर थी। इसने भी निकलते ही राजकुमार से रोटी माँगी।

राजकुमार ने खुशी खुशी उसको रोटी दे दी। रोटी खा कर वह बोली — “अब मैं तुम्हारी हूँ बोलो मैं तुम्हारे लिये क्या कर सकती हूँ।”

राजकुमार बोला — “मैं तो तुमसे शादी करना चाहता हूँ।”

उस लड़की ने कोई कपड़ा नहीं पहना हुआ था और क्योंकि राजकुमार शादी करने के लिये उसको अपने महल ले जाना चाहता था और इस हालत में वह उसको अपने घर नहीं ले जा सकता था। उसने जिप्सी के कपड़े देखे तो वे तो बहुत गन्दे थे।

सो राजकुमार ने उस लड़की से कहा — “तुम यहीं इस जिप्सी के पास ठहरो तब तक मैं तुम्हारे लिये कुछ कपड़े ले कर आता हूँ।

जिप्सी के भी एक बेटी थी जो गाड़ी में सो रही थी इसलिये वह यह सब नहीं देख पायी थी जो वहाँ हो रहा था। जब राजकुमार वहाँ से चला गया तब वह लड़की जाग गयी और उसने राजकुमार को जाते हुए देख लिया। राजकुमार को देखते ही वह उसको प्यार करने लगी।

वह तुरन्त ही गाड़ी में से कूद पड़ी और अपने पिता से पूछा कि वहाँ क्या हुआ था। जिप्सी ने उसको सब कुछ बता दिया।

उस जिप्सी लड़की ने उस सन्तरे वाली लड़की को देखा तो वह उससे बोली — “लाओ मैं तुम्हारे बाल सँवार दूँ। इससे जब राजकुमार आयेगा तब तुम बहुत सुन्दर दिखायी दोगी।”



वह लड़की तैयार हो गयी। जैसे ही उस जिप्सी लड़की ने उस के बालों में कंघी करनी शुरू की अचानक ही उसने एक पिन उसके सिर में चुभो दी। इससे तुरन्त ही वह लड़की एक फाख्ता के रूप में बदल गयी और उड़ गयी।

फिर उस जिप्सी लड़की ने अपने कपड़े उतार दिये और उस सन्तरे वाली लड़की की जगह बैठ गयी।

जल्दी ही राजकुमार कपड़े ले कर लौट आया तो उसने उस लड़की को देख कर उससे पूछा — “अरे तुम इतनी सॉवली कैसे हो गयीं?”

उस जादूगरनी ने जवाब दिया — “इस तेज़ धूप से मेरा रंग सॉवला पड़ गया है।”

राजकुमार ने उस जिप्सी लड़की का विश्वास कर लिया कि वह वही सन्तरे वाली लड़की थी और अब उसका रंग सॉवला पड़ गया था। वह उसको अपने महल ले गया और उससे शादी कर ली।

एक दिन एक फाख्ता राजा के बागीचे में आयी और वहाँ के माली से पूछा — “ओ राजा के माली, राजकुमार और उसकी पत्नी कैसे हैं?”

माली बोला — “कभी कभी तो राजकुमार गाते हैं पर अक्सर तो वह रोया ही करते हैं।” उसके बाद वह फाख्ता वहाँ बराबर आती रही और राजकुमार के बारे में पूछती रही।

एक दिन उस माली ने राजकुमार को उस फाख्ता के बारे में बताया तो राजकुमार ने माली को कहा कि अगली बार जब भी वह फाख्ता बागीचे में आये तो वह उसको पकड़ ले।

माली ने उस पेड़ पर जहाँ वह फाख्ता आ कर बैठती थी एक जाल बिछा दिया सो अगली बार जब वह फाख्ता वहाँ आयी और फिर वहाँ से उसने उड़ने की कोशिश की तो उड़ ही नहीं पायी। वह

तो माली के बिछाये जाल में फँस गयी थी। माली उसको पकड़ कर राजकुमार के पास ले गया।

राजकुमार को वह छोटी सी फाख्ता बहुत अच्छी लगी सो उसने उसको अपने हाथों में ले लिया और उसके सिर पर हाथ फेरने लगा।

जब वह उस फाख्ता के सिर पर हाथ फेर रहा था तो उसको उसके सिर में एक पिन महसूस हुई। उसने उस पिन को खींच कर बाहर निकाल दिया। जैसे ही उसके सिर से वह पिन निकली वह फाख्ता फिर से सन्तरे वाली लड़की बन गयी।

तब उसने राजकुमार को सारी कहानी बतायी और राजकुमार ने वह सारी कहानी राजा को सुनायी।

राजा यह सुन कर बहुत गुस्सा हुआ और उस जिप्सी को जला कर मारने की सजा सुना दी। राजकुमार और सन्तरे वाली लड़की की शादी हो गयी और वे दोनों खुशी खुशी रहने लगे।



5 तीन अनारों से प्यार²³

तीन सन्तरे जैसी यह लोक कथा यूरोप महाद्वीप के इटली देश की लोक कथाओं से ली गयी है।

एक बार एक राजा का बेटा शाम को मेज पर बैठा खाना खा रहा था कि रिकोटा चीज़²⁴ काटते समय वह अपनी उंगली काट बैठा।

उस कटी हुई जगह से एक बूँद खून टपक कर चीज़ के ऊपर गिर गया। यह देख कर उसने अपनी माँ से कहा — “माँ मुझे दूध जैसी सफेद और खून जैसी लाल पत्नी चाहिये।”

माँ बोली — “क्यों मेरे बेटे। जो कोई लड़की इतनी गोरी होगी वह इतनी लाल नहीं होगी और जो इतनी लाल होगी तो वह इतनी गोरी नहीं होगी। पर फिर भी तुम दुनियाँ में घूमो और ऐसी लड़की की तलाश करो शायद तुमको ऐसी कोई लड़की मिल जाये।”

सो राजा का बेटा ऐसी दुलहिन ढूँढने चल दिया। कुछ दूर जाने के बाद उसको एक स्त्री मिली। उसने राजकुमार से पूछा — “ओ नौजवान, तुम कहाँ जा रहे हो?”

राजकुमार बोला — “मैं अपना भेद एक स्त्री पर प्रगट नहीं करता।” और यह कह कर वह आगे बढ़ गया।

²³ The Love of the Three Pomegranates (Story No 107) – a folktale from Abruzzo area, Italy, Europe. Adapted from the book: “Italian Folktales”, by Italo Calvino. Translated by George Martin in 1980.

²⁴ Ricotta cheese is a kind of processed Indian Paneer used in western world.

आगे जा कर उसको एक बूढ़ा मिला। उसने भी राजकुमार से यही पूछा — “बेटे, तुम कहाँ जा रहे हो?”

राजकुमार बोला — “हाँ, मैं आपको तो यह बता ही सकता हूँ कि मैं कहाँ जा रहा हूँ। जनाब आप सुनें, मैं एक ऐसी लड़की की तलाश में हूँ जो दूध जैसी सफेद भी हो और खून जैसी लाल भी हो।”

बूढ़ा बोला — “बेटे, जो खून जैसी लाल होगी वह दूध जैसी सफेद नहीं होगी और जो दूध जैसी सफेद होगी तो वह खून जैसी लाल नहीं होगी।

खैर, तुम ऐसा करो कि तुम ये तीन अनार ले लो। इनको तोड़ना और देखना कि इनमें से क्या निकलता है। पर ध्यान रहे कि इनको किसी फव्वारे के या पानी के पास ही तोड़ना।”

राजकुमार ने उस बूढ़े से वे तीनों अनार ले लिये और आगे चल दिया। आगे चल कर एक फव्वारे के पास उसने उनमें से एक अनार तोड़ा तो उसमें एक लड़की निकली जो दूध जैसी सफेद और खून जैसी लाल थी।

वह लड़की निकलते ही चिल्लायी — “ओ नौजवान, मुझे पानी दो वरना मैं मर जाऊँगी।”

राजकुमार ने अपने दोनों हाथों को पानी में डुबो कर उनमें पानी भरा और उसको दिया पर वह सुन्दर लड़की यह कहते हुए कि उसको पानी देने में देर हो गयी वहीं मर गयी।

फिर उसने दूसरा अनार तोड़ा तो उसमें से एक और सुन्दर लड़की निकली। यह लड़की भी दूध की तरह सफेद और खून की तरह लाल थी। उसने भी निकलते ही कहा — “ओ नौजवान, मुझे पानी दो वरना मैं मर जाऊँगी।”

वह उसके लिये भी पानी ले कर आया पर फिर भी पानी लाने में उसको देर हो गयी और वह लड़की भी वहीं मर गयी। राजकुमार को बड़ा दुख हुआ सो अबकी बार उसने तीसरा अनार तोड़ने से पहले ही फव्वारे से पानी ला कर रख लिया।

अब उसने तीसरा अनार तोड़ा तो उसमें से भी एक सुन्दर लड़की निकली। यह लड़की भी दूध की तरह सफेद और खून की तरह लाल थी। यह पिछली दोनों लड़कियों से ज़्यादा सुन्दर थी।



इस बार राजकुमार ने तुरन्त ही उसके मुँह पर पानी फेंका और वह ज़िन्दा रही। उसने कोई कपड़ा नहीं पहना हुआ था सो राजकुमार ने उसको अपना शाल²⁵ ओढ़ा दिया।

फिर राजकुमार ने उस लड़की से कहा — “तुम इस पेड़ पर चढ़ जाओ तब तक मैं तुम्हारे पहनने के

²⁵ Translated for the word “Cloak” – see its picture above.

लिये कुछ कपड़े और तुमको ले जाने के लिये एक गाड़ी ले कर आता हूँ।”

यह कह कर वह राजकुमार तो चला गया और वह लड़की उस फव्वारे के पास लगे हुए एक पेड़ पर चढ़ कर बैठ गयी।

एक मुस्लिम खानाबदोश²⁶ लड़की उस फव्वारे पर रोज पानी भरने आया करती थी। वह उस दिन भी वहाँ पानी भरने आयी। जैसे ही उसने अपना मिट्टी का घड़ा फव्वारे के पानी में पानी भरने के लिये डुबोया तो उस पानी में उसको उस लड़की के चेहरे की परछाई दिखायी दी।

उसको लगा कि वह परछाई उसके अपने चेहरे की है सो वह एक लम्बी सी साँस भर कर बोली -

वह मैं जो खुद बहुत सुन्दर हूँ पानी का बरतन ले कर घर जाऊँ?

और यह कह कर उसने वह बरतन तुरन्त ही पानी में से निकाल लिया और जमीन पर पटक दिया। बरतन मिट्टी का था सो जमीन पर गिरते ही टूट गया। वह बिना पानी और बिना बरतन लिये ही घर चली गयी।

जब वह घर पहुँची तो उसकी मालकिन ने उसको खाली हाथ आते देख कर गुस्से से डाँटा — “ओ बदसूरत खानाबदोश, तेरी

²⁶ Translated for the word “Saracen” – this word was used in Europe for Muslim nomads in those times.

हिम्मत कैसे हुई बिना पानी लिये घर वापस आने की? और तू तो बरतन भी नहीं लायी? कहाँ है बरतन?”

सो उस खानाबदोश लड़की ने एक और मिट्टी का बरतन उठाया और फिर फव्वारे पर लौट गयी। जब वह अपने बरतन में फिर पानी भरने लगी तो फिर उसको वही परछाईं दिखायी दी। उसको फिर लगा कि वह अपने चेहरे की परछाईं पानी में देख रही है सो वह फिर बोली —

में इतनी सुन्दर और पानी का बरतन ले कर घर जाऊँ?

उसने फिर अपना मिट्टी का बरतन जमीन पर पटक दिया। वह बरतन भी मिट्टी का था सो वह भी जमीन पर गिरते ही टूट गया और वह फिर बिना पानी और बिना बरतन के घर चली गयी।

उसकी मालकिन ने फिर उसको इस तरह खाली हाथ आने और दो बरतन खोने के लिये बहुत डाँटा तो उसने फिर एक और बरतन उठाया और फिर पानी भरने के लिये फव्वारे पर चली गयी।

फिर उसने पानी लेने के लिये बरतन फव्वारे के पानी में डुबोया तो फिर उस लड़की की परछाईं पानी में देख कर फिर उसने वह बरतन तोड़ दिया।

अब तक वह लड़की पेड़ पर चुपचाप बैठी थी पर अबकी बार जब उसने वह बरतन तोड़ा तो वह हँस पड़ी। उसकी हँसी की

आवाज सुन कर उस खानाबदोश लड़की ने ऊपर की तरफ देखा तो वहाँ तो एक बहुत सुन्दर लड़की बैठी थी।

वह चिल्लायी — “ओह तो वह तुम हो। तुमने ही मेरे तीन बरतन तुड़वाये और यह चौथा भी तुड़वाने वाली थी। पर तुम वाकई बहुत सुन्दर हो। मुझे तुम्हारे बाल बहुत अच्छे लग रहे हैं। आओ तुम नीचे आओ मैं तुम्हारे बाल सँवार दूँ।”

वह लड़की पेड़ से नीचे उतरना नहीं चाहती थी परन्तु बदसूरत खानाबदोश लड़की ने उससे पेड़ से नीचे उतरने की बहुत जिद की — “तुम मेरे पास आओ न, मैं तुम्हारे बाल बना दूँ। इससे तुम और भी ज़्यादा सुन्दर लगोगी।”

कहते हुए उस बदसूरत खानाबदोश लड़की ने उसको उसका हाथ पकड़ कर पेड़ से नीचे उतार लिया। उसने उसके बाल खोले तो उसको उसके बालों में लगी एक पिन दिखायी दे गयी। उसने वह पिन उस बेचारी लड़की के कान में ठूस दी।



इससे उस लड़की के कान में से एक बूँद खून निकल कर नीचे गिर पड़ा और वह मर गयी। पर जब वह खून की बूँद जमीन पर पड़ी तो वह एक कबूतरी²⁷ बन गयी और उड़ गयी।

²⁷ Translated for the word “Wood Pigeon” – see its picture above.

इस तरह उस लड़की को मार कर और उसके कपड़े पहन कर वह बदसूरत खानाबदोश लड़की खुद पेड़ पर चढ़ कर बैठ गयी।

थोड़ी देर में राजकुमार गाड़ी और कपड़े ले कर वापस आ गया और बदसूरत खानाबदोश की तरफ आश्चर्य से देख कर बोला — “अरे तुम तो दूध जैसी सफेद और खून जैसी लाल थीं। तुम इतनी साँवली कैसे हो गयीं?”

बदसूरत खानाबदोश लड़की बोली — “जब सूरज बाहर निकला तो धूप की वजह से मैं साँवली पड़ गयी।”

“पर तुम्हारी तो आवाज भी बदली हुई है, वह कैसे बदल गयी?”

इसके जवाब में वह खानाबदोश लड़की बोली — “हवा ज़ोर से चली और उसी ने मेरी आवाज ऐसी कर दी।”

“पर तुम तो बहुत सुन्दर थीं और अब तो तुम बहुत ही बदसूरत लग रही हो।”

इसके जवाब में वह बोली — “तभी ठंडी हवा चली जिसने मेरे चेहरे को जमा दिया।”

इन जवाबों से राजकुमार को विश्वास हो गया कि वह वही लड़की थी जिसको वह छोड़ कर गया था और वह उसको गाड़ी में बिठा कर अपने घर ले गया। महल में आ कर राजकुमार ने उससे शादी कर ली। अब वह राजकुमार की पत्नी बन गयी।

उधर वह कबूतरी रोज सुबह राजकुमार के शाही रसोईघर की खिड़की पर आ कर बैठ जाती और रसोइये से कहती — “ओ शापित रसोईघर के रसोइये, तू मुझे बता कि राजकुमार इस समय उस बदसूरत खानाबदोश लड़की के साथ क्या कर रहा है?”

शाही रसोइया जवाब देता — “वह खाता है, पीता है और सो जाता है, बस।”



कबूतरी फिर कहती — “तू मुझे थोड़ा सा सूप दे दे तो मैं तुझे सोने के आलूबुखारे²⁸ दूँगी।”

रसोइया उसको एक कटोरा भर के सूप देता और वह कबूतरी सूप पी कर अपने को हिला डुला कर अपने कुछ सोने के पंख गिरा देती और उड़ जाती।

पर अगली सुबह वह फिर आ जाती और फिर रसोइये से पूछती — “ओ शापित रसोईघर के रसोइये, तू मुझे बता कि राजकुमार इस समय उस बदसूरत खानाबदोश लड़की के साथ क्या कर रहा है?”

शाही रसोइया फिर वही जवाब देता — “वह खाता है, पीता है और सो जाता है, बस।”

²⁸ Translated for the word “Plums” – see their picture above.

कबूतरी फिर कहती — “तू मुझे थोड़ा सा सूप दे दे तो मैं तुझे सोने के आलूबुखारे दूँगी।”

रसोइया फिर उसको एक कटोरा भर के सूप देता, वह उस सूप को पीती और फिर अपने को हिला डुला कर अपने कुछ सोने के पंख गिरा देती और उड़ जाती।

कुछ समय बाद रसोइये ने सोचा कि वह राजा के पास जा कर यह सब राजा को बताये। सो वह राजा के पास गया और उसने जा कर उसको सारी कहानी सुनायी।

राजा ने उसकी कहानी ध्यान से सुनी और बोला — “कल जब वह कबूतरी तुम्हारे पास आये तो उसको पकड़ लेना और मेरे पास ले आना। मैं उसको अपने पास रखूँगा।”

बदसूरत खानाबदोश लड़की उन दोनों की बात सुन रही थी। वह यह जान गयी कि उसने उस कबूतरी को वहाँ से उड़ जाने देने की गलती कर ली थी। पर अब वह क्या करे?

सो अगले दिन सुबह जब वह कबूतरी खिड़की पर आ कर बैठी तो उस खानाबदोश लड़की ने रसोइये को खूब पीटा और उस कबूतरी के शरीर में लोहे की एक सलाई घुसा कर उसे मार डाला।



इससे कबूतरी तो मर गयी पर उसके खून की एक बूँद खिड़की के बाहर जमीन पर गिर पड़ी। उस बूँद से तुरन्त ही वहाँ अनार का एक पेड़ उग आया।

अनार के इस पेड़ में एक जादू था कि जो भी मर रहा हो अगर वह इस पेड़ का एक अनार खा ले तो वह ज़िन्दा हो जाता था। इस लिये उस बदसूरत खानाबदोश लड़की के पास उस पेड़ का एक अनार लेने के लिये एक लम्बी लाइन लगी रहती।

आखीर में उस पेड़ के सब अनार खत्म हो गये और उस पेड़ पर केवल एक अनार रह गया। वह अनार उन सब अनारों में सबसे बड़ा था जो उस पेड़ पर पहले लगे थे। सो उस खानाबदोश लड़की ने सबको यह कह दिया कि अब इस पेड़ के सारे अनार खत्म हो गये हैं और अब यह आखिरी अनार मैं अपने लिये रखूंगी।

एक दिन एक बुढ़िया वहाँ आयी और उस खानाबदोश लड़की से बोली — “रानी जी, मेहरबानी करके यह अनार मुझे दे दीजिये। मेरे पति की हालत बहुत खराब है। अगर यह अनार आप मुझे दे देंगी तो मेरे पति बच जायेंगे।”

वह खानाबदोश लड़की बोली — “अब इस पेड़ पर बस यह एक ही अनार बचा है और इसको अब मैंने सजावट के लिये यहाँ रखा हुआ है।”

पर राजकुमार ने उसको ऐसा करने से मना किया। वह बोला — “उस बेचारी बुढ़िया के पति की हालत बहुत खराब है। तुमको उसको अनार देने से मना नहीं करना चाहिये।”

इस तरह राजकुमार ने उस खानाबदोश लड़की से उस आखिरी अनार को उस बुढ़िया को दिलवा दिया। बुढ़िया खुशी खुशी वह अनार ले कर घर चली गयी।

पर घर जा कर उसने देखा कि उसका पति तो तब तक मर गया था। उसने सोचा “तो अब मैं इस अनार को सजावट के लिये ही रख लेती हूँ” और वह उसने एक खुली आलमारी में रख दिया। उस अनार में वह लड़की रहती थी।

वह बुढ़िया रोज “मास”²⁹ पढ़ने चर्च जाती थी। जब वह मास पढ़ने के लिये चली जाती तो वह लड़की उस अनार में से निकलती।

वह उस बुढ़िया के लिये आग जलाती, उसका घर साफ करती और उसके लिये खाना बनाती। खाना बना कर उसको उसकी खाने की मेज पर लगाती और यह सब करके वह फिर अपने अनार में चली जाती।

वह बुढ़िया जब घर वापस आती तो अपना घर ठीक ठाक पा कर और अपने लिये खाना बना देख कर बहुत चकित होती। एक

²⁹ Mass is a kind of Christian worship

दिन वह चर्च के कनफेशन के कमरे³⁰ में गयी और अपने कनफेशन सुनने वाले से जा कर उसे सब कुछ बताया ।

वह बोला — “तुम ऐसा करो कि कल तुम मास जाने का केवल बहाना बनाओ पर अपने घर में या फिर अपने घर के आस पास ही कहीं छिप जाओ और फिर देखो कि तुम्हारे घर में क्या क्या होता है । इस तरीके से तुम जान पाओगी कि तुम्हारे घर में यह सब काम कौन करता है ।”

अगले दिन उस कनफेशन सुनने वाले की सलाह मान कर उस बुढ़िया ने मास जाने का केवल बहाना ही किया । वह घर के बाहर तक गयी और दरवाजे के बाहर तक जा कर रुक गयी और एक ऐसी जगह जा कर खड़ी हो गयी जहाँ से वह अपना घर अच्छी तरह से देख सकती थी ।

उसके जाने के बाद वह लड़की रोज की तरह अपने अनार में से निकली और उस बुढ़िया के घर का काम करना शुरू कर दिया ।

तभी वह बुढ़िया घर के अन्दर आ गयी । बुढ़िया को देख कर वह लड़की अपने अनार के अन्दर घुसने की कोशिश करने लगी पर उस बुढ़िया ने उसे अनार के अन्दर जाने से पहले ही पकड़ लिया ।

बुढ़िया ने पूछा — “तुम कहाँ से आयी हो?”

³⁰ Confession Box – it is a place in the Church where normally a sinner accepts his or her mistakes and sins and promises not to do it again in front of a priest, but there is curtain between them so they cannot see each other that who is confessing and who is hearing.

वह लड़की बोली — “भगवान आपको सुखी रखे, मुझे मारना नहीं, मुझे मारना नहीं।”

बुढ़िया प्यार से बोली — “मैं तुमको मारूंगी नहीं पर मैं यह जानना चाहती हूँ कि तुम आयी कहाँ से हो?”

लड़की बोली — “मैं इस अनार के अन्दर रहती हूँ।”
और उसने बुढ़िया को अपनी सारी कहानी सुना दी।

उसकी कहानी सुन कर उस बुढ़िया ने उसको अपने जैसी किसान लड़की की पोशाक पहनायी क्योंकि इस लड़की ने अभी भी कपड़े नहीं पहन रखे थे।

अगले रविवार को वह उसको मास के लिये चर्च ले गयी। वहाँ पर राजकुमार भी आता था। उसने उस लड़की को देखा तो उसके मुँह से निकला — “हे भगवान, मुझे तो अपनी आँखों पर विश्वास ही नहीं हो रहा कि यह वही लड़की है जिससे मैं फव्वारे पर मिला था।”

सो मास खत्म हो जाने के बाद उसने चर्च के बाहर उस बुढ़िया का इन्तजार करने का निश्चय किया। जब वह बुढ़िया चर्च के बाहर निकली तो राजकुमार ने उससे पूछा — “मुझे सच सच बताइये माँ जी कि यह लड़की आपके पास कहाँ से आयी?”

“सरकार मुझे मारियेगा नहीं।”

राजकुमार बहुत बेचैनी से बोला — “नहीं नहीं, मैं आपको बिल्कुल नहीं मारूँगा। बस आप मुझे यह बता दें कि यह लड़की आपके पास आयी कहाँ से?”

बुढ़िया फिर भी डरते डरते बोली — “यह लड़की उस अनार में से निकली है जो आपने मुझे दिया था।”

राजकुमार फिर बोला — “तो यह भी अनार में थी?”

फिर वह उस लड़की से बोला — “पर तुम इस अनार में घुसी कैसे?”

इस पर उसने राजकुमार को अपनी सारी कहानी सुना दी। राजकुमार उस लड़की को ले कर महल वापस लौटा और सीधा उस खानाबदोश लड़की के पास गया। उसने उस अनार वाली लड़की से उस खानाबदोश लड़की के सामने एक बार फिर अपनी कहानी सुनाने को कहा।

जब अनार वाली लड़की ने अपनी कहानी खत्म कर दी तो राजकुमार ने खानाबदोश लड़की से कहा — “सुना तुमने? मैं अपने हाथों से तुमको मारना नहीं चाहता इसलिये अच्छा है कि तुम खुद ही मर जाओ।”

खानाबदोश लड़की ने देखा कि अब कोई और रास्ता नहीं रह गया है तो वह बोली “मेरे अन्दर लोहे की एक सलाई घुसा दो और मुझे शहर के चौराहे पर जला दो तो मैं मर जाऊँगी।” ऐसा ही किया गया।

इसके बाद राजकुमार ने उस अनार वाली लड़की से शादी कर ली और दोनों बहुत दिनों तक खुशी खुशी रहे ।



6 एक छोटा चरवाहा³¹

“तीन सन्तरे” जैसी यह लोक कथा हमने तुम्हारे लिये यूरोप महाद्वीप के इटली देश की लोक कथाओं से ली है।

एक बार एक लड़का था जो भेड़ चराया करता था। वह लड़का साइज़ में एक छोटे से कीड़े से ज़्यादा बड़ा नहीं था।

एक दिन जब वह अपनी भेड़ों को चराने के लिये घास के मैदानों की तरफ जा रहा था तो वह एक अंडे बेचने वाली के पास से गुजरा। वह अंडे बेचने वाली एक टोकरी में अंडे भर कर उनको बेचने के लिये बाजार ले कर जा रही थी।

उसको देख कर उसे शरारत सूझी। उसने उस अंडे बेचने वाली की टोकरी की तरफ एक पत्थर फेंका और उस एक ही पत्थर से उस स्त्री की टोकरी में रखे सारे अंडे टूट गये।

इससे उस स्त्री को गुस्सा आ गया तो उसने उस लड़के को शाप दे दिया — “तुम इससे बड़े कभी नहीं होगे जब तक तुम तीन गाने वाले सेबों की सुन्दर बरगैगलीना³² को नहीं ढूँढ लोगे।”

उस दिन के बाद से वह लड़का फिर और बड़ा नहीं हुआ बल्कि और पतला दुबला होता चला गया। उसकी माँ उसकी जितनी

³¹ The Little Shepherd (Story No 8) – a folktale from Genoa, Italy, Europe.

Adapted from the book “Italian Folktales” by Italo Calvino. Translated by George Martin in 1980.

³² Bargagliana – name of the girl of three singing apples

ज्यादा देखभाल करती वह उतना ही और पतला दुबला होता जाता ।

एक दिन उसकी माँ ने उससे पूछा — “बेटा, तुझे क्या हो गया है? क्या तूने किसी का कुछ बुरा किया है जो उसने तुझे शाप दे दिया है? तू बड़ा ही नहीं होता ।”

तब उसने अपनी नीचता की कहानी अपनी माँ को सुनायी कि कैसे उसने पत्थर मार कर एक अंडे बेचने वाली की टोकरी में रखे सारे अंडे तोड़ दिये थे ।

और फिर उसने उस स्त्री के शब्द भी दोहरा दिये — “तुम इससे बड़े कभी नहीं होगे जब तक तुम तीन गाने वाले सेबों की सुन्दर बरगैगलीना को नहीं ढूँढ लोगे ।”

उसकी माँ बोली — “अगर ऐसी बात है तो तुम्हारे पास इसके सिवा और कोई चारा नहीं है बेटा कि तुम उस तीन गाने वाले सेबों की सुन्दर बरगैगलीना को ढूँढो ।”

यह सुन कर वह लड़का उस तीन गाने वाले सेबों की सुन्दर बरगैगलीना को ढूँढने चल दिया ।

चलते चलते वह एक पुल के पास आया । वहाँ एक स्त्री एक अखरोट के खोल में बैठी झूल रही थी । उसने उस लड़के को देखा तो पूछा — “उधर कौन जा रहा है?”

चरवाहा बोला — “एक दोस्त ।”

“जरा मेरी पलक तो उठा दो ताकि मैं तुमको देख सकूँ ।”

चरवाहे ने उसकी पलक उठा दी तो उसने उसी तरफ देख कर पूछा — “तुम कहाँ जा रहे हो?”

“मैं तीन गाने वाले सेबों की सुन्दर बरगैगलीना को ढूँढने जा रहा हूँ। क्या तुमको उसका कुछ अता पता मालूम है?”

“नहीं वह तो मुझे नहीं मालूम है पर तुम यह पत्थर लेते जाओ शायद यह तुम्हारे काम आये।” कह कर उसने चरवाहे को एक पत्थर पकड़ा दिया। चरवाहे ने उससे वह पत्थर ले लिया और आगे चल दिया।

आगे जा कर उसको एक और पुल मिला जहाँ एक और छोटी स्त्री एक अंडे के खोल में बैठी नहा रही थी। उसने भी पूछा — “इधर कौन जा रहा है?”

चरवाहे ने जवाब दिया — “एक दोस्त।”

वह स्त्री बोली — “ज़रा मेरी पलक तो उठा दो ताकि मैं तुम्हें देख सकूँ।”

चरवाहे ने उसकी भी पलक उठा दी तो उसने उसको देख कर पूछा — “तुम कहाँ जा रहे हो?”

“मैं तीन गाने वाले सेबों की सुन्दर बरगैगलीना को ढूँढने जा रहा हूँ। क्या तुमको उसका कुछ अता पता मालूम है?”

“नहीं वह तो मुझे नहीं मालूम है पर तुम यह हाथी दाँत की कंघी लेते जाओ तुम्हारे काम आयेगी।” कह कर उसने चरवाहे को

एक कंघी दे दी। चरवाहे ने वह कंघी अपनी जेब में रखी, उसको धन्यवाद दिया और आगे चल दिया।

चलते चलते वह एक नाले के पास आया जहाँ एक आदमी उस नाले के पास खड़ा खड़ा अपने थैले में कोहरा भर रहा था। उस चरवाहे ने उस आदमी से भी पूछा कि क्या वह तीन गाने वाले सेबों की सुन्दर बरगैगलीना को जानता था। पर उसने भी वही जवाब दिया कि वह उसको नहीं जानता था।

पर उस आदमी ने उस चरवाहे को एक जेब भर कर कोहरा दे दिया और कहा कि वह उसको अपने साथ ले जाये उसके काम आयेगा। चरवाहे ने उस आदमी से कोहरा लिया और उसको धन्यवाद दे कर आगे बढ़ गया।



चलते चलते वह एक चक्की के पास आया जो एक लोमड़े की थी। चरवाहे ने लोमड़े से भी पूछा कि क्या वह तीन गाने वाले सेबों की सुन्दर बरगैगलीना को जानता था।

लोमड़ा बोला — “हाँ मैं जानता हूँ कि वह सुन्दर बरगैगलीना कौन है पर तुमको उसे ढूँढने में बहुत परेशानी होगी। तुम यहाँ से सीधे चले जाओ तो वहाँ तुमको एक घर मिलेगा। उस घर का दरवाजा खुला होगा।

तुम उस दरवाजे से अन्दर चले जाना तो वहाँ तुमको क्रिस्टल का एक पिंजरा दिखायी देगा। उस पिंजरे में बहुत सारी छोटी छोटी घंटियाँ लगी हैं। उसी पिंजरे में वे गाने वाले सेब रखे हैं।

तुम वह पिंजरा उठा लेना पर वहाँ एक बुढ़िया का ध्यान रखना क्योंकि वहाँ एक बुढ़िया भी होगी। अगर उसकी आँखें खुली हों तो समझना कि वह सो रही है और अगर उसकी आँखें बन्द हों तो समझना कि वह सब कुछ देख रही है।”

उस लोमड़े की इस सलाह के साथ वह चरवाहा और आगे बढ़ा और उस घर तक आ गया जो उसको लोमड़े ने बताया था। उस घर का दरवाजा वाकई खुला हुआ था सो वह उस घर के अन्दर चला गया।

घर के अन्दर जा कर उसने देखा कि वहाँ एक क्रिस्टल का एक पिंजरा रखा है जिसमें घंटियाँ लगी हुई हैं और उसी के पास एक बुढ़िया बैठी है जिसकी आँखें बन्द हैं।



क्योंकि उसकी आँखें बन्द थीं इसलिये लोमड़े के कहे अनुसार वह सब कुछ देख रही थी। उस बुढ़िया ने चरवाहे से कहा — “ज़रा देखना तो मेरे बालों में कहीं कोई जूँ³³ तो नहीं हैं?”

उसने उस बुढ़िया के बालों में झाँका तो वहाँ उसको उसके बालों में कुछ जूँ दिखायी दीं। वह उसके सिर की जूँ निकालने

³³ Translated for the word “Lice”. See its picture above.

लगा। जब वह उसके सिर में से जूँ निकाल रहा था तो उस बुढ़िया की आँखें खुल गयीं। अब उसको पता चल गया कि वह अब सो गयी थी।

उसको सोता देख कर चरवाहे ने तुरन्त ही क्रिस्टल का वह पिंजरा वहाँ से उठाया और भाग लिया। पर उस पिंजरे को ले जाते समय उसकी छोटी छोटी घंटियाँ बज उठीं और वह बुढ़िया जाग गयी। उसने उस चरवाहे के पीछे सौ घुड़सवार भेजे।

जब चरवाहे ने देखा कि वे घुड़सवार उसके काफी पास आ गये हैं तो उसने अपनी जेब में रखा पत्थर का टुकड़ा निकाल कर अपने पीछे फेंक दिया।

जमीन पर पड़ते ही उस पत्थर का एक बहुत बड़ा पहाड़ बन गया। उस बुढ़िया के कुछ घोड़े उससे टकरा कर मर गये और कुछ की टाँगें टूट गयीं। घोड़े बेकार होने की वजह से वे और आगे नहीं जा सके और वे सब घुड़सवार वापस लौट गये।

उन घुड़सवारों को वापस आया देख कर उस बुढ़िया ने अबकी बार **200** घुड़सवार उसके पीछे भेजे। चरवाहे ने एक नया खतरा देखा तो अपनी जेब से हाथी दाँत की कंधी निकाल कर अपने पीछे फेंक दी।

वह कंधी जहाँ गिरी थी वहाँ एक शीशे जैसा चिकना पहाड़ खड़ा हो गया जिस पर चढ़ते ही सारे घोड़े फिसल फिसल कर गिर पड़े और मर गये। सो वे **200** घुड़सवार भी वापस चले गये।

उनको वापस आया देख कर उस बुढ़िया ने अबकी बार 300 घुड़सवार भेजे। इतने सारे घुड़सवारों के देख कर उस चरवाहे ने अपनी जेब से कोहरा निकाल कर फेंक दिया। वह कोहरा सारे में फैल गया और वे सारे घुड़सवार उस कोहरे में खो कर रह गये।

इस बीच वह चरवाहा वहाँ से बच कर भाग तो लिया पर रास्ते में उसको प्यास लग आयी। रास्ते में उसके पास पीने के लिये कुछ भी नहीं था सो उसने सोचा कि वह पिंजरे में से गाने वाला एक सेब निकाल कर खा लेता है।

उसने पिंजरे में से एक सेब निकाला और उसको काटा तो उसमें से एक छोटी सी आवाज आयी — “सेब ज़रा धीरे से काटो वरना मुझे बहुत तकलीफ होगी।”

यह सुन कर उसने वह सेब बड़ी धीरे धीरे काटा। उसमें से उसने आधा सेब खाया और दूसरा आधा सेब अपनी जेब में रख लिया। फिर वह अपने रास्ते चल पड़ा।



चलते चलते वह अपने घर के पास वाले कुँए पर आ गया। वहाँ उसने अपनी जेब में से दूसरा आधा सेब निकालने के लिये हाथ डाला तो वहाँ उसको उसका बचा हुआ सेब तो नहीं

मिला, हाँ एक छोटी सी लड़की वहाँ जरूर खड़ी थी।

चरवाहा तो यह देख कर आश्चर्यचकित रह गया। वह लड़की बोली — “मैं सुन्दर बरगैगलीना हूँ और मुझे केक बहुत पसन्द है। मुझे केक खाना है मुझे बहुत भूख लगी है।”

उस कुँए के चारों तरफ एक दीवार थी और बीच में एक छेद था सो चरवाहे ने उस सुन्दर बरगैगलीना को उस कुँए की दीवार पर बिठा दिया और उससे कहा कि जब तक वह उसके लिये केक ले कर आता है वह उसका वहीं इन्तजार करे।

इसी बीच बदसूरत नाम की एक दासी वहाँ आयी। वह वहाँ उस कुँए से पानी खींचने आयी थी।

उसको वहाँ वह सुन्दर सी छोटी सी लड़की दिखायी दी तो उसने अपने मन में सोचा — “यह कैसे हुआ कि यह तो इतनी छोटी सी है और इतनी सुन्दर है और मैं इतनी बड़ी हूँ और इतनी बदसूरत हूँ।”

यह सोच कर ही वह दासी इतनी गुस्सा हुई कि उसने उस छोटी सी लड़की को कुँए में फेंक दिया। जब चरवाहा उस छोटी सुन्दर बरगैगलीना के लिये केक ले कर वहाँ आया तो उसने देखा कि उसकी सुन्दर बरगैगलीना तो वहाँ थी ही नहीं।

उसका दिल टूट गया। कितनी मुश्किल से तो वह उसको ले कर आया था और अब जब वह मिल गयी थी तो वह गायब भी हो गयी।

उस चरवाहे की माँ भी उसी कुँए पर पानी भरने आती थी। एक दिन पानी भरते समय उसकी बालटी में एक छोटी सी मछली आ गयी।

वह उस मछली को घर ले गयी और उसको खाने के लिये तल लिया। माँ ने वह तली हुई मछली खुद भी खायी और अपने बेटे को भी खिलायी। और उसकी हड्डियाँ बाहर फेंक दीं।

उस मछली की हड्डियाँ जहाँ जा कर गिरीं वहाँ एक पेड़ उग आया और समय के साथ साथ वह पेड़ इतना बड़ा हो गया कि उसने चरवाहे के घर की रोशनी रोक दी।

यह देख कर उस चरवाहे ने उस पेड़ को काट डाला और उसकी लकड़ी को आग जलाने के काम में लाने के लिये घर के अन्दर रख लिया।

यह सब करते करते चरवाहे की माँ मर गयी और अब वह घर में अकेला रह गया। वह और भी दुबला होता जा रहा था। वह अपने बड़ा होने के लिये कुछ भी करता पर वह बड़ा ही नहीं हो पा रहा था।

रोज सुबह ही वह घास के मैदानों में चला जाता और रात होने पर ही घर लौटता। घर आ कर उसको बहुत आश्चर्य होता जब वह देखता कि सुबह जो बरतन वह गन्दे छोड़ गया था वे सब साफ रखे हैं और उसका घर भी साफ है।

उसने सोचा कि यह जानने के लिये कि उसके घर में उसके पीछे यह सब कौन कर रहा है उसको एक दिन घर में रुकना ही पड़ेगा।

सो अगले दिन वह घर से बाहर जाने के लिये निकला तो पर बाहर नहीं गया। वह वहीं दरवाजे के पीछे छिप गया और देखता रहा कि उसके घर में उसके पीछे कौन आता है।

कुछ समय बाद ही उसने देखा कि लकड़ी के ढेर में से एक बहुत ही सुन्दर सी लड़की निकली। उसने उसके सारे बरतन साफ किये, घर को झाड़ा बुहारा, उसका बिस्तर ठीक किया। फिर उसने आलमारी खोली और केक खाया।

बस इसी समय वह चरवाहा उछल कर दरवाजे के पीछे से बाहर निकल आया और उससे पूछा — “तुम कौन हो और तुम अन्दर कैसे आयीं?”

लड़की बोली — “मैं सुन्दर बरगैगलीना हूँ। वह लड़की जिसको तुमने अपनी जेब में रखे आधे सेब में पाया था। जब तुम मुझे वहाँ कुँए पर बिठा कर चले गये तब वहाँ एक बदसूरत दासी आयी और उसने मुझे कुँए में धकेल दिया। कुँए में गिर कर मैं मछली बन गयी।

उसके बाद तुम लोगों ने मुझे तल कर खा लिया और मेरी हड्डियाँ बाहर फेंक दीं। वहाँ गिर कर मैं एक पेड़ बन गयी। तुमने वह पेड़ काट कर उसकी लकड़ी अपने घर में रख ली। अब जब तुम घर में नहीं होते तो मैं सुन्दर बरगैगलीना बन जाती हूँ।”

चरवाहा यह सुन कर बहुत खुश हो गया कि उसको सुन्दर बरगैगलीना फिर से मिल गयी थी। अब वह चरवाहा दिन दूना रात चौगुना बढ़ने लगा था और उसके साथ साथ वह सुन्दर बरगैगलीना भी बढ़ने लगी।

जल्दी ही वह चरवाहा बढ़ कर एक सुन्दर नौजवान हो गया और सुन्दर बरगैगलीना भी बड़ी हो कर और सुन्दर हो गयी। दोनों ने आपस में शादी कर ली और दोनों खुशी खुशी रहने लगे।



7 जादुई खीरे³⁴

तीन सन्तरे जैसी यह लोक कथा हमने तुम्हारे लिये अफ्रीका महाद्वीप के जिम्बाब्वे देश की लोक कथाओं से ली है। इस कथा में खीरों में से लड़कियाँ निकलती हैं।

एक बार जिम्बाब्वे देश के एक गाँव में एक नौजवान रहता था। उसका नाम वाँगे³⁵ था। हालाँकि उस गाँव में बहुत सारी लड़कियाँ थीं पर फिर भी वह अभी तक कुँआरा ही था क्योंकि उन लड़कियों का कहना था कि वह बहुत ही पतला दुबला और बदसूरत था।

उसकी उम्र के दूसरे नौजवानों की शादियाँ हो चुकी थीं और वहाँ के रीति रिवाजों के अनुसार किसी किसी के तो एक से ज़्यादा पत्नियाँ भी थीं।

इसलिये इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं थी कि वाँगे यह सब देख देख कर और सोच सोच कर ही दिन पर दिन दुबला हुआ जा रहा था कि कोई लड़की उससे शादी नहीं करना चाह रही थी। वह देखने में तो सुन्दर नहीं था परन्तु वह दयालु बहुत था।

एक दिन उस गाँव के लोगों ने कुश्ती का प्रोग्राम रखा। सुबह सवेरे ही गाँव के सारे लोग मैदान में इकट्ठा हो गये। वाँगे भी उनके

³⁴ Magical Cucumbers – a folktale of Zimbabwe, Southern Africa.

³⁵ Wange – name of the man who was not married

साथ था। दोपहर तक उन सबमें खूब कुश्ती हुई। दोपहर को जब काफी गरम हो गया सो सभी लोग कुश्ती रोक कर पेड़ों की छाया में लेट गये।

एक आदमी ने ढोल बजाना शुरू किया तो उनकी पत्नियों को पता चल गया कि उनके पतियों के दोपहर के खाने का समय हो गया है सो वे सब अपने अपने पतियों के लिये दोपहर का खाना लेकर कुश्ती के मैदान को चलीं।

सभी ने अपनी अपनी पत्नियों के हाथ का स्वाददार खाना पेट भर कर खाया परन्तु वाँग की तो कोई पत्नी ही नहीं थी इसलिये न तो उसके लिये कोई खाना ही ले कर आया और न ही वहाँ उसको किसी ने खाना खाने के लिये पूछा।

वाँगे बेचारा भूख से परेशान था। उसने सोचा — “काश, मेरी भी कोई पत्नी होती तो वह भी मेरे लिये खाना लाती। अब तो मुझे अपने आप ही अपना खाना ढूँढना पड़ेगा। चलूँ, पास की नदी से ही कोई मछली पकड़ता हूँ।”

ऐसा सोच कर वह पास की नदी की तरफ चल दिया।

उसने अपना मछली पकड़ने वाला काँटा नदी में फेंका। काँटा खींचने पर भारी लगा तो उसने सोचा कि “लगता है आज कोई बड़ी मछली फँसी है क्योंकि मेरा काँटा खूब भारी हो गया है। आज तो मजा आ गया।”

यह सोच कर उसने जैसे ही वह काँटा जोर लगा कर ऊपर खींचा तो उस काँटे की रस्सी टूट गयी और वह काँटा नदी में डूब गया।

वह दुखी हो कर बोला — “अरे, यह तो रस्सी भी टूट गयी, मेरा काँटा भी गया। मैं मछली भी नहीं पकड़ सका और मैं भूखा भी रह गया। मैं इस बड़ी मछली को किसी भी हाल में अपने हाथ से जाने नहीं दूँगा।” और वह तुरन्त ही नदी में कूद गया।



पर चारों ओर देखने पर भी उसको नदी में मछली तो कोई दिखायी नहीं दी, हाँ, एक बहुत बड़ा मगर जरूर दिखायी दे गया।

वाँगे ने उससे पूछा — “क्या तुमने मेरा काँटा चुराया है?”

मगर ने जवाब दिया — “नहीं, इन सब खेलों के लिये तो मैं अब काफी बूढ़ा हो चुका हूँ लेकिन मैंने तुम्हारा काँटा चुराने वाले को उस रास्ते पर जाते हुए जरूर देखा है। अगर तुम जल्दी से उधर चले जाओ तो शायद उसे पकड़ पाओ।” यह कह कर उसने पानी में जाते एक रास्ते की तरफ इशारा कर दिया।

जिस तरफ मगर ने इशारा किया था वाँगे ने उस तरफ देखा तो उसे पानी में जाता एक पथरीला रास्ता दिखायी दिया जिसके दोनों तरफ घास लगी हुई थी। उसने मगर को धन्यवाद दिया और उस रास्ते पर चल दिया।

सबसे अधिक आश्चर्य की बात तो यह थी कि वह रास्ता पानी के अन्दर था और पानी के अन्दर साँस लेने में उसे कोई मुश्किल नहीं हो रही थी।



वह उस रास्ते पर ऐसे बढ़ता चला जा रहा था जैसे धरती पर चल रहा हो। रास्ते में उसने सुनहरी रुपहली मछलियाँ देखीं, पानी के साँप देखे और हरे केकड़े भी देखे।

चलते चलते अचानक ही वह काले सफेद पत्थरों से बने एक घर के सामने जा पहुँचा। वहाँ पहुँच कर उसने आवाज लगायी — “नमस्ते, अन्दर कोई है?”

मकान के अन्दर से आवाज आयी “नमस्ते” और कुछ ही पल में झुकी हुई कमर वाली एक बुढ़िया बाहर आयी।

वाँगे ने बुढ़िया से पूछा — “यहाँ किसी ने मेरा काँटा चुरा लिया है क्या आप बता सकती हैं कि मेरा काँटा किसने चुराया है?”

बुढ़िया ने पूछा — “पर तुम यहाँ इस पानी के राज्य में क्या कर रहे हो, ओ आदमी के बच्चे?”

वाँगे बोला — “मैं नदी पर मछलियाँ पकड़ रहा था कि मेरा काँटा खो गया। मैं उसे ढूँढते ढूँढते यहाँ तक आ गया।”

बुढ़िया बोली — “क्या? तुम एक छोटे से काँटे के लिये इतनी तकलीफ उठा रहे हो? बड़े गरीब लगते हो।”

वाँगे बोला — “जी हाँ यही मेरे खाने पीने का सहारा है इसलिये मैं इसे खोना नहीं चाहता।”

बुढ़िया के मुँह से निकला “ओह” और पास से उसने एक स्पंज तोड़ लिया और वाँगे से कहा — “यह स्पंज लो और ज़रा मेरी पीठ तो साफ कर दो।”

हालाँकि वाँगे इस समय बुढ़िया की पीठ साफ करने के बिल्कुल भी मूड में नहीं था परन्तु क्योंकि स्वभाव से ही वह बहुत दयालु था इसलिये वह उस स्पंज से बुढ़िया की पीठ साफ करने लगा।

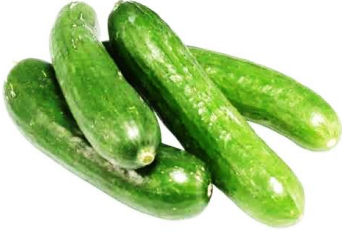
थोड़ी देर बाद वह बुढ़िया से बोला — “यह लीजिये, आपकी पीठ साफ हो गयी। अब यह चाँद की तरह चमक रही है।”

बुढ़िया ने कहा — “नहीं, अभी नहीं, थोड़ा और साफ करो।”

तो वाँगे ने फिर से उसकी पीठ साफ करनी शुरू कर दी। थोड़ी देर बाद वह फिर बोला — “यह लीजिये, अब शायद आपकी पीठ साफ हो गयी है क्योंकि अब यह सूरज की तरह चमक रही है।”

बुढ़िया ने कहा — “धन्यवाद बेटा, मैं तुमसे बहुत खुश हूँ। अब तुम मुझसे जो चाहे माँग लो। बोलो तुम्हें क्या चाहिये?”

वाँगे अपना काँटा खोने का दुख तो भूल गया और खुशी से भर कर बोला — “मुझे एक सुन्दर सी पत्नी चाहिये। क्या आप मुझे वह दे सकेंगी?”



बुढ़िया बोली — “जरूर जरूर, क्यों नहीं।” कह कर वह घर के अन्दर गयी और चार सुन्दर चिकने खीरे ले आयी।

उन खीरों को वाँगे को देते हुए वह बोली — “लो ये खीरे लो और घर वापस चले जाओ। जब तुम नदी के किनारे पहुँचोगे तब इनको तोड़ना। इनमें से हर खीरे में से एक एक सुन्दर लड़की निकलेगी।

लेकिन याद रखना कि इन खीरों को नदी के किनारे ही तोड़ना, उससे पहले नहीं, क्योंकि ये लड़कियाँ तुरन्त ही पीने के लिये पानी माँगेगी और अगर तुमने इनको तुरन्त ही पानी न दिया तो ये सब गायब हो जायेंगी और फिर कभी नहीं आयेंगी।”

वाँगे को हालाँकि बुढ़िया की इन बातों पर ज़रा भी विश्वास नहीं हुआ पर फिर भी सिर झुका कर उसने “अच्छा जी” कहा और वे खीरे उससे ले कर अपनी जेब में रख लिये।

फिर बोला — “धन्यवाद, मेरे ऊपर यह आपकी बड़ी मेहरबानी है कि आपने मुझे इतनी सुन्दर भेंट दी। जैसा आपने कहा है मैं वैसा ही करूँगा।”

ऐसा कह कर वह वहाँ से अपने घर की तरफ चल दिया। रास्ते में उसने सोचा — “अब मैं कभी अपना काँटा वापस नहीं पा सकूँगा इसलिये जब मैं धरती पर पहुँच जाऊँगा तब इन खीरों को खा लूँगा।”

धरती पर पहुँच कर उसने देखा कि वह बूढ़ा मगर अभी भी वहीं लेटा हुआ है। वाँगे ने उसको नमस्ते की और ऊपर चल दिया।

ऊपर अभी भी बहुत गरम था इसलिये वह नदी से कुछ दूर पर लगे एक पेड़ की छाया में बैठ गया। कुछ देर बाद उसने अपनी जेब से चारों खीरे निकाले और उनको अपने हाथों में उलटने पलटने लगा। वे उसे बहुत ही रसीले और ताजे दिखायी दे रहे थे।

उसे बहुत तेज़ भूख लगी थी सो वह उन खीरों को खाना चाहता था। उसने खीरा खाने के लिये हाथ बढ़ाया ही था कि उसे बुढ़िया के शब्द याद आये कि इन खीरों को नदी के पास ही तोड़ना।

उसने तय किया कि वह पहले बुढ़िया के कहे अनुसार ही करेगा। अगर वे जादू के खीरे हुए तो उनमें से लड़कियाँ जरूर निकलेंगी सो उसने ऐसा ही किया। पर वह यह अन्दाज नहीं लगा सका कि उसको वे खीरे पानी के कितने पास तोड़ने चाहिये।

उसने पहले एक खीरा तोड़ा। तुरन्त ही उसमें से एक सुन्दर लड़की निकल कर उसके सामने खड़ी हो गयी और बोली “पानी दो”। वाँगे तो उसको देख कर आश्चर्यचकित सा बैठा ही रह गया, न हिल सका न डुल सका।

उस लड़की ने फिर कहा “मुझे पानी चाहिये।” अब वह जैसे सपने से जगा और उसे ख्याल आया कि उसे तो ये खीरे नदी के

किनारे तोड़ने चाहिये थे। वह तुरन्त ही नदी से पानी लेने भागा और पानी ले कर उलटे पैरों वापस आया पर उसे देर हो गयी थी और वह लड़की गायब हो चुकी थी।

सो बुढ़िया की बात तो सच निकली। वह पछताने लगा कि अपनी बेवकूफी से उसने अपनी इतनी सुन्दर पत्नी खो दी।

अब वह बाकी बचे हुए खीरे नदी के किनारे ले आया और उसने पानी भी अपने पास रख लिया।

उसने फिर दूसरा खीरा तोड़ा। उसमें से भी एक सुन्दर सी लड़की निकली और बोली “पानी”। वाँगे ने काँपते हाथों से उसे पानी पिलाया। अबकी बार वह लड़की गायब नहीं हुई बल्कि उसको देख कर मुस्कुरा दी।

इसी तरह उसने बाकी बचे दो खीरे भी तोड़े और उनमें से भी दो सुन्दर लड़कियाँ निकलीं। उसने उनको भी तुरन्त ही पानी पिलाया।

कुछ देर के लिये तो वह हक्का बक्का रह गया, उसके मुँह से एक शब्द भी न निकला। फिर जब वह होश में आया तो उन तीनों लड़कियों से बोला — “चलो घर चलते हैं। जब वह घर पहुँचा तो रात हो चुकी थी। वह जल्दी से अपनी तीनों पत्नियों को ले कर घर के अन्दर घुस गया ताकि उन्हें कोई देख न ले।

अगली सुबह फिर कुश्ती हुई। वॉगे भी उनके साथ था। दोपहर को जब खाने का समय हुआ तो सभी लोगों की पत्नियाँ अपने अपने पतियों के लिये खाना ले कर आयीं।

पहले दिन की तरह से उस दिन भी किसी ने भी वॉगे को खाना नहीं दिया सो वह उनसे कुछ दूर हट कर बैठ गया।

अचानक उसने सरसराहट और फुसफुसाहट की आवाजें सुनी। उसके सभी साथी फुसफुसा रहे थे। तभी उसकी नजर सामने पड़ी तो उसने देखा कि उसकी तीनों पत्नियाँ कुछ न कुछ अपने सिर पर रखे चली आ रही थीं।

उसकी पहली पत्नी ने उसके आगे दलिये का बरतन रखा, दूसरी ने माँस का और तीसरी ने पीने के साफ पानी का। वॉगे ने बड़े प्रेम से खाना खाना शुरू कर दिया।

वहाँ बैठे सभी लोगों को बड़ा आश्चर्य हुआ कि कल तक तो यह अकेला था और आज इसके लिये इसकी तीन तीन पत्नियाँ खाना ले कर आयी हैं। यह मामला क्या है?

वे तुरन्त ही दौड़े दौड़े वॉगे के पास पहुँचे और उससे सवाल पर सवाल करने शुरू कर दिये — “तुमको ये पत्नियाँ कहाँ से मिलीं?” “तुम कोई सरदार हो जो तुम तीन तीन पत्नियाँ रखे हो?”

“हमने इतनी सुन्दर लड़कियाँ तो पहले कभी नहीं देखीं।”

“हमारी पत्नियाँ तो इनके आगे बहुत ही बदसूरत और भद्दी दिखायी देती हैं।” आदि आदि वाक्य वॉगे के कानों में पड़ने लगे।

वाँगे ने जवाब दिया — “आप लोग शान्ति से बैठें तो मैं आपको सब कुछ बताता हूँ।” कह कर उसने कौटा खोने से ले कर पत्नियों मिलने तक की पूरी कहानी उन सबको बता दी।

उसकी कहानी सुनते ही वे सब भी विचार करने लगे कि किस तरह पानी में जा कर वैसी सुन्दर लड़कियों को लाया जाये।

तुरन्त ही वे सब घर गये और अपनी अपनी पत्नियों को कह आये कि तुम सभी बड़ी बदसूरत हो इसलिये तुम अपने अपने पिता के घर जाओ अब हम तुम्हें नहीं रखेंगे। पत्नियाँ बेचारी रोती हुई अपने अपने पिता के घर चली गयीं।

उधर वे सब लोग नदी के किनारे आ गये जहाँ वाँगे ने अपना मछली का कौटा खोया था। उन्होंने भी अपने अपने कौटे पानी में फेंके और इस बात का इन्तजार किये बिना ही कि कोई मछली उसमें फँसी कि नहीं वे नदी में कूद गये।

वह बूढ़ा मगर आश्चर्यचकित सा अभी भी वहीं लेटा हुआ था। वे सभी उसको ऐसे ही छोड़ कर घर को जाने वाले पथरीले रास्ते की तरफ बढ़ गये।

वे लोग इतनी जल्दी में थे कि न तो वे मछलियों की सुन्दरता ही देख सके और न ही हरे केकड़ों पर नजर डाल सके। आखिर वे उस पथरीले रास्ते पर चलते हुए उसी काले सफेद पत्थरों के बने हुए घर के सामने आ खड़े हुए जहाँ वाँगे पहुँचा था।

किसी को वहाँ न देख कर उन्होंने चिल्लाना शुरू किया — “ओ बुढ़िया, अरी ओ बुढ़िया, जल्दी से बाहर निकल और हम सबको सुन्दर सुन्दर पलियाँ दे वरना हम सभी मिल कर तुझे पीटेंगे।”

बेचारी बुढ़िया काँपती सी घर के बाहर आयी और पहले की तरह एक स्पंज तोड़ा और उसे उन लोगों की तरफ ले जा कर बोली — “मेरी पीठ बड़ी गन्दी हो रही है पहले ज़रा मेरी पीठ साफ कर दो।”

पर वे सभी इस बात पर ज़ोर से हँस कर बोले — “यह हमारा काम नहीं है। हम तेरी पीठ साफ क्यों करेंगे? हमको तो बस तू जल्दी से वे जादू के खीरे दे दे जिनको तोड़ने पर सुन्दर सुन्दर लड़कियाँ निकल आती हैं नहीं तो हम तेरे टुकड़े टुकड़े कर देंगे।”



वह बुढ़िया बेचारी धीरे धीरे घर के अन्दर गयी और दो टोकरी में बहुत सारे खुरदरे खीरे ले आयी। सभी लोगों ने टोकरी की टोकरी छीननी शुरू कर दी परन्तु बुढ़िया ने सबको केवल सात सात खीरे ही दिये।

उन लोगों ने सोचा कि हम तो वाँगे से बहुत अच्छे हैं क्योंकि वाँगे को तो केवल तीन ही खीरे मिले थे पर हमको तो सात सात खीरे मिले हैं। हमारी किस्मत उससे ज़्यादा अच्छी है। वे दौड़ते भागते खीरे तोड़ने के चक्कर में तुरन्त ही नदी के किनारे जा पहुँचे।

जल्दी जल्दी उन्होंने खीरे तोड़े। सबसे पहले आदमी ने जैसे ही अपना पहला खीरा तोड़ा वह डर गया क्योंकि उसके सामने एक उससे भी लम्बी और बदसूरत औरत खड़ी थी।

सभी के साथ ऐसा ही हुआ। इस उम्मीद में कि किसी खीरे में से तो कोई सुन्दर सी लड़की निकलेगी उन्होंने सारे खीरे तोड़ डाले।

पर उन खीरों में निकली हर औरत पहली औरत से कहीं ज़्यादा लम्बी और कहीं ज़्यादा बदसूरत होती गयी।

उनमें से सबसे लम्बी और सबसे ज़्यादा बदसूरत औरत ने कहा — “तुम हमको बदसूरत कहते हो?” और ऐसा कह कर उन्होंने सबने मिल कर उन सबको पीटना शुरू कर दिया।

दर्द से चिल्लाते हुए सभी आदमी गाँव की तरफ भागे और उन बदसूरत औरतों से बचने के लिये अपने घरों में छिप कर दरवाजा बन्द कर लिया। पर वे सब औरतें गाँव में आते ही गायब हो गयीं।

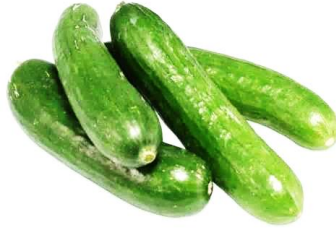
जब सब कुछ शान्त हो गया तब वे लोग अपने अपने घरों से बाहर निकले। अब उन्हें लगा कि वे कितने भूखे थे परन्तु वहाँ कोई भी औरत खाना बनाने के लिये नहीं थी क्योंकि अपनी सभी पत्नियों को तो उन्होंने उनके पिता के घर भेज दिया था।

कुछ लोगों ने अपनी पत्नियों को वापस लाने की कोशिश भी की पर बेकार। पत्नियों ने कहा — “तुम लोगों ने हमारे दिल को

ठेस पहुँचायी है इसलिये ऐसे बेरहम पतियों के पास हमें हमारे माता पिता भेजने को तैयार नहीं हैं।”

उधर वॉगे के पास अब तीन पत्नियाँ थीं और सब लोग उसको इज़्ज़त से देखने लगे थे। अच्छा खाना मिलने से अब वह सुन्दर भी हो गया था।

दूसरे लोगों को पत्नियों की खोज में फिर से दूर दूर जगह जाना पड़ा। फिर जब उनको पत्नियाँ मिल गयीं तो उन्होंने फिर कभी उनको बदसूरत नहीं कहा।



8 कबूतर पालतू कैसे बना³⁶

तीन सन्तरे जैसी लोक कथाओं के इस संग्रह की यह लोक कथा दक्षिणी अमेरिका के ब्राज़ील देश की लोक कथाओं से ली गयी है।

तुम लोगों ने कबूतर तो देखा ही होगा। यह अक्सर घरों में आ जाता है। और यह केवल अपने आप ही नहीं आता बल्कि बहुत से लोग इसको पालते भी हैं। बहुत सारे लोग इसको दाना खिलाते हैं।

इंगलैंड में लन्दन के ट्राफ़लगर स्क्वायर³⁷ पर तो इनकी भीड़ जमा रहती है क्योंकि वहाँ बहुत सारे लोग इनको दाना खिलाते हैं। वहाँ दाना बेचने वाले रहते हैं जिनसे वे दाना खिलाने वाले दाना खरीद लेते हैं और इनको दाना खिलाते हैं। बच्चों को वहाँ बहुत मजा आता है।

कई बार ये वहाँ लोगों के कन्धों पर बाँहों पर भी बैठ जाते हैं तो लोग बहुत खुश होते हैं।

एक बार की बात है कि दक्षिणी अमेरिका के ब्राज़ील देश में एक पिता रहता था जिसके तीन बेटे थे। उसके वे तीनों बेटे अब

³⁶ How the Pigeon Became a Tame Bird – a folktale from Brazil, South America.

Taken from the Web Site :

<http://www.worldoftales.com/South American folktales/South American Folktale 20.html>

These tales appear in a Book : “Fairy Tales From Brazil”, by Elsie Spicer Eells. Chicago, Dodd, Mead and Company, Inc. 1917. How and Why Tales from Brazilian Folklore. 18 Tales. This book is given at the above Web Site.

³⁷ Trafalgar Square, London, UK

इतने बड़े हो गये थे कि उनको अब अपना खाना कमाना शुरू कर देना चाहिये था।

सो एक दिन उसने अपने तीनों बेटों को बुलाया और उनसे कहा कि अब वे बड़े हो गये हैं और उनको अपना खाना खुद कमाना सीखना चाहिये।



इस काम के लिये जब वे बाहर जाने लगे तो उसने अपने तीनों बेटों को एक एक बड़ा सा तरबूज दिया और कहा कि वे जब भी उसको काटें तो किसी

पानी वाली जगह के पास ही काटें।

तीनों भाइयों ने अपने पिता से तरबूज लिये और अपनी यात्रा पर चल दिये। तीनों ने अपने लिये अलग अलग रास्ते चुने।

जैसे ही उनमें से सबसे बड़ा भाई घर से बाहर निकला और घर उसकी आँखों से ओझल हुआ उसने अपना तरबूज तोड़ दिया। एक बहुत सुन्दर सी लड़की उस तरबूज में से निकल आयी और बोली — “या तो मुझे पानी दो और या फिर दूध दो।”

अब क्योंकि उस बेटे ने अपने पिता का कहना नहीं माना था सो न तो वहाँ आस पास में कहीं पानी था और उसके पास दूध तो था ही नहीं। सो वह तुरन्त ही मर गयी।

दूसरे बेटे ने भी पिता का घर छोड़ा और एक ऐसा रास्ता पकड़ा जो उसको एक ऊँची सी पहाड़ी पर ले जाता था। तरबूज बड़ा था और भारी था। उसको ले कर पहाड़ के ऊपर की चढ़ाई पर चढ़ना बहुत मुश्किल था।

सो कुछ देर में ही वह थक गया और उसको प्यास भी लग आयी। उसने चारों तरफ देखा कि कहीं उसको पानी दिखायी दे जाये पर उसको कहीं पानी ही दिखायी नहीं दिया।

उसको ऐसा भी नहीं लगा कि उसको पानी कहीं जल्दी ही मिल जायेगा सो उसने सोचा कि वह अपनी प्यास बुझाने के लिये तरबूज ही तोड़ कर खा लेता है। और उसने वह तरबूज तोड़ दिया।

उसके आश्चर्य का तो ठिकाना ही नहीं रहा जब उसने देखा कि उसमें से तो एक लड़की निकल पड़ी और उसने उससे कहा — “या तो मुझे पानी दो और या फिर दूध दो।”

अब क्योंकि उसने तो अपनी प्यास बुझाने के लिये ही तरबूज तोड़ा था तो उसके पास पानी कहाँ से होता और दूध तो उसके पास था ही नहीं। सो वह उसको न तो पानी दे सका और न दूध ही दे सका सो वह भी तुरन्त ही मर गयी।

तीसरा बेटा भी अपने रास्ते पर चला जा रहा था। उसका रास्ता भी एक ऊँची पहाड़ी के तरफ जाता था। कुछ देर बाद वह भी चलते चलते थक गया और उसको भी प्यास लग आयी।

उसने कई बार सोचा कि अपनी प्यास बुझाने के लिये वह अपना तरबूज तोड़ ले पर बार बार उसको अपने पिता की बात याद आयी और वह उसको तोड़ने से रुक गया। उनकी सलाह के अनुसार वह उसको पानी के पास ही तोड़ना चाहता था।

सो वह इस उम्मीद में चलता रहा कि शायद कुछ आगे चल कर उसको पानी का कोई झरना मिल जाये। पर किस्मत से उसे वहाँ कोई पानी नहीं मिला। न तो पहाड़ चढ़ते समय और न ही उसके दूसरी तरफ उतरते समय।

हाँ उस पहाड़ की तलहटी में एक गाँव जरूर बसा हुआ था जिसके बीचोबीच एक फव्वारा लगा हुआ था। वह तुरन्त ही उस फव्वारे की तरफ दौड़ गया और पेट भर कर ठंडा पानी पिया।

पानी पी कर उसने तरबूज तोड़ा तो उसमें से एक लड़की निकली और बोली — “या तो मुझे पानी दो और या फिर दूध दो।”

उसने तुरन्त ही उसको ठंडा पानी पिलाया और उसको एक छिपने की जगह ले गया। वह उसको एक पेड़ की घनी डालियों के पीछे ले गया जो वहीं फव्वारे के पास में ही लगा हुआ था। उसको वहाँ बिठा कर वह खाने की खोज में चला गया।

उसके जाने के कुछ ही देर बाद उस फव्वारे पर एक अफ्रीकन लड़की पानी भरने आयी। उसके हाथ में पानी भरने के लिये एक बहुत बड़ा घड़ा था।

जब उस अफ्रीकन लड़की ने अपना घड़ा पानी भरने के लिये उस फव्वारे के पानी में डुबोया तभी पेड़ के ऊपर बैठी लड़की ने पेड़ की घनी डालियों के बीच में से नीचे झाँका। इससे उसकी परछाईं फव्वारे के पानी में पड़ी।

उस अफ्रीकन लड़की ने उस ऊपर बैठी लड़की के सुन्दर चेहरे की परछाईं पानी में देखी तो बोली — “ओह मैं तो कितनी सुन्दर हो गयी। यह कितनी खराब बात है कि कोई इतनी सुन्दर लड़की अपने सिर पर पानी का घड़ा रख कर ले कर जाये।”

और उसने अपना घड़ा नीचे फेंक दिया जिससे उसके टुकड़े टुकड़े हो गये। घड़ा फेंक कर वह घर चली गयी। जब वह बिना पानी और बिना घड़े के घर पहुँची तो उसकी मालकिन ने उसको बहुत मारा और उसको दूसरा घड़ा दे कर दोबारा पानी लेने के लिये भेजा।

सो वह बेचारी पानी लेने के लिये फिर उसी फव्वारे पर आयी।

इस बार फिर वैसा ही हुआ। जब उस अफ्रीकन लड़की ने पानी भरने के लिये अपना घड़ा फव्वारे के पानी में डुबोया तभी ऊपर बैठी लड़की ने डालियों के बीच से नीचे झाँका तो उसके सुन्दर चेहरे की परछाईं फिर उस पानी में पड़ी।

जब अफ्रीकन लड़की ने उसे देखा तो उसको लगा कि वह उसी का चेहरा था सो वह फिर बोल पड़ी — “ओह मैं तो कितनी सुन्दर

हो गयी। यह कितनी खराब बात है कि कोई इतनी सुन्दर लड़की अपने सिर पर पानी का घड़ा रख कर ले कर जाये।”

इस बार पेड़ पर बैठी लड़की हँस दी। उसकी हँसी की आवाज सुन कर अफ्रीकन लड़की ने ऊपर देखा तो वहाँ एक बहुत सुन्दर लड़की को बैठे देखा।



वह उससे बोली — “ओह तो वह तुम हो जिसने मुझे पिटवाया है।” उसने अपनी कमीज से एक पिन निकाली और ऊपर चढ़ कर जंगली तरीके से उस सुन्दर लड़की के शरीर में चुभो दी।

तभी एक अजीब सी बात हुई। पेड़ पर बैठी हुई लड़की तो वहाँ से गायब हो गयी और उसकी जगह वहाँ एक कबूतर बैठा था। उसी समय वहाँ वह लड़का खाना ले कर आ गया।

जब उस नौकरानी ने उस लड़के के कदमों की आहट सुनी तो वह तो डर के मारे मर सी गयी। उसने तुरन्त ही अपने आपको उसी पेड़ की घनी डालियों के पीछे छिपा लिया।

जब उस लड़के ने पेड़ की डालियों के पीछे उस सुन्दर लड़की को ढूँढा तो वह तो एक सुन्दर सी लड़की की जगह उस अफ्रीकन लड़की को देख कर बहुत ही आश्चर्यचकित रह गया।

उसने उससे पूछा — “अरे मेरे पीछे तुमको यह क्या हो गया?”

लड़की बोली — “ओह सूरज की गरमी से मेरी खाल जल गयी। बस यही हुआ मेरे साथ। यह सब कुछ नहीं। तुम चिन्ता न करो। जब मैं इस गरम जगह से निकल जाऊँगी तब मैं फिर से वैसी ही सुन्दर हो जाऊँगी।”

सो उस लड़के ने उसके साथ शादी कर ली और इस उम्मीद में उसको गरम जगहों से दूर ले गया कि शायद वह फिर से पहले जैसी सुन्दर हो जाये जैसी कि वह उसको फव्वारे के पास छोड़ कर गया था जब वह खाना ढूँढने गया था। पर ऐसा नहीं हुआ। वह तो काली की काली ही रही।

बरसों गुजर गये। अब वह लड़का बहुत अमीर हो गया था और एक बहुत बड़े मकान में रहता था। उसके मकान के चारों तरफ बहुत सुन्दर बागीचा था जिसमें बहुत किस्म के बहुत सारे फूल लगे हुए थे। शानदार पेड़ खड़े हुए थे जिन पर हमेशा चिड़ियाँ चहचहाया करती थीं और वहाँ उन्होंने अपने घोंसले बना रखे थे।

इतना समय गुजर जाने के बाद और इतना सुन्दर मकान होने के बाद भी वह लड़का खुश नहीं था। इतनी काली लड़की उसकी पत्नी थी यह उसका एक बहुत बड़ा इम्तिहान था।

अक्सर वह अपने बागीचे के रास्तों पर घूमता रहता और शाम को यह सोचता कि कितना अच्छा होता अगर उसकी पत्नी वह लड़की होती जिसे उसने सबसे पहले देखा था।

जब वह अपने बागीचे में घूमता तो एक कबूतर हमेशा उसके पीछे पीछे लगा रहता। वह उसके सिर के चारों तरफ ऐसे घूमता कि उस तरीके से उसका घूमना उसको बिल्कुल अच्छा नहीं लगता।

एक दिन जब उसकी पत्नी बीमार थी और उसने एक भुना हुआ कबूतर खाने की इच्छा प्रगट की तो उसने उसी कबूतर को भूनने का हुकुम दे दिया।

जब उस लड़के की खाना बनाने वाली अपनी मालकिन के लिये उस कबूतर को खाने के लिये तैयार कर रही थी तो उसने उस कबूतर की छाती पर एक बहुत ही छोटा सा काला धब्बा देखा।

उसको लगा कि वह गन्दगी का कोई धब्बा है सो उसने उसे मल मल कर साफ करने की कोशिश की पर वह उसको काफी साफ करने के बावजूद साफ नहीं कर सकी क्योंकि वह कोई धब्बा तो था नहीं जो साफ हो जाता वह तो पिन थी जो उसकी छाती में गड़ी हुई थी जो उस अफ्रीकन लड़की ने गाड़ दी थी।

उसने उसको खींच कर निकालने की भी बहुत कोशिश की पर वह उसको खींच कर भी नहीं निकाल सकी। सो उसने मालिक को बुलाया और उसको वहाँ से निकालने के लिये कहा।

लड़के ने तुरन्त ही वह पिन खींच कर बाहर निकाल दी।

अरे वाह। वहाँ तो उस कबूतर की बजाय वही सुन्दर लड़की खड़ी थी जो तरबूज में से निकली थी और जिसे वह फव्वारे के पास

पेड़ की घनी डालियों के पीछे छिपा कर आया था। उस लड़के ने उस लड़की को तुरन्त ही पहचान लिया।

जब उस लड़के की अफ्रीकन पत्नी को यह पता चला कि उसके पति को इतने सालों बाद अपनी सुन्दर पत्नी मिल गयी है तो उसने अपना जुर्म मान लिया और फिर मर गयी।

उस लड़के ने उस सुन्दर लड़की से शादी कर ली जो अभी भी उतनी ही सुन्दर थी जितनी कि वह तब थी जब उसने उसको पहली बार देखा था। वे दोनों बहुत खुश थे पर वह लड़की अपने उस समय को नहीं भुला सकी जब वह कबूतर के रूप में थी।

उस समय तक कबूतर जंगली चिड़ियें हुआ करते थे जो जंगलों में अपने घोंसले बनाया करते थे। पर अब उस लड़के की पत्नी की यह इच्छा हुई कि वे अब उसके बागीचे में घोंसला बनायें। सो उसने अपने बागीचे में चिड़ियों के छोटे छोटे घर बनवा दिये।

एक दिन एक बहादुर कबूतर बागीचे में उड़ आया और उसने वहाँ चिड़ियों के बहुत सारे घर देखे तो वह अपना परिवार वहाँ ले आया। उसने दूसरे कबूतरों को भी बता दिया कि उनके रहने के लिये भी वहाँ बहुत सारे घर हैं।

पर दूसरे कबूतर इतने बहादुर नहीं थे सो उन्होंने यह देखने का इन्तजार किया कि उनसे पहले जो कबूतर वहाँ गये थे कहीं उन पर कोई मुसीबत तो नहीं आने वाली।

पर जब उन्होंने देखा कि वहाँ पर उनके साथ कोई दर्दनाक घटना नहीं घटी तो वे भी वहाँ आ गये और वहाँ खुशी खुशी रहने लगे। और उसके बाद तो वहाँ रहने के लिये बहुत सारे कबूतर आ गये और सब बहुत खुश थे।

और अब सालों बाद तो वे जंगलों में अपने घोंसले बनाना पसन्द भी नहीं करते थे बल्कि वे लोगों के घरों के पास ही अपने घोंसले बनाते थे। कबूतरों बेचारों को तो इस बात का खुद भी नहीं पता कि यह सब कैसे हुआ।

पर वह सुन्दर लड़की जो एक बार खुद कबूतर थी उसके जब बच्चे हुए तो उसने उनको इस बारे में बताया। फिर उन बच्चों ने अपने बच्चों को बताया और उन बच्चों ने अपने बच्चों को बताया।

और इस तरह से आज ब्राज़ील के बच्चे अपने कबूतरों के बारे में यह सब कुछ जानते हैं। और उनके बड़े यह कहानी कह कर उनको इसके बारे में यह बताते रहते हैं कि वे घर में कैसे आये।



Three Oranges Like Stories

1. The Love for Three Oranges
2. The Three Citrons of Love
3. The Three Golden Oranges
4. The Gypsy Queen
5. The Love of Three Pomegranates
6. The Little Shepherd
7. Magical Cucumbers
8. How the Pigeon Became a Tame Bird

Books in “One Story Many Colors” Series

1. Cat and Rat Like Stories
2. Tom Thumb Like Stories
3. Six Swans Like Stories
4. Three Oranges Like Stories
5. Snow White and the Seven Dwarves Like Stories
6. Sleeping Beauty Like Stories
7. Pig King Like Stories
8. Puss in Boots Like Stories
9. Hansel and Gratel Like Stories
10. Red Riding Hood Like Stories
11. Cinderella Like Stories
12. Cinderella in the World
13. Rumpelstiltskin Like Stories
14. Ali Baba and Forty Thieves Like Stories
15. Crocodile and Monkey Like Stories
16. Frog Princess Like Stories
17. Lion and Man Like Stories
18. Soldier and Death Like Stories

देश विदेश की लोक कथाओं की सीरीज़ में प्रकाशित पुस्तकें —

36 पुस्तकें www.Scribd.com/Sushma_gupta_1 पर उपलब्ध हैं।

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हिन्दी ब्रेल में संसार भर में उन सबको निःशुल्क उपलब्ध है जो हिन्दी ब्रेल पढ़ सकते हैं।

Write to :- E-Mail : hindifolktales@gmail.com

- 1 नाइजीरिया की लोक कथाएँ-1
- 2 नाइजीरिया की लोक कथाएँ-2
- 3 इथियोपिया की लोक कथाएँ-1
- 4 रैवन की लोक कथाएँ-1

नीचे लिखी हुई पुस्तकें ई-मीडियम पर सोसायटी ऑफ फौकलोर, लन्दन, यू के, के पुस्तकालय में उपलब्ध हैं।

Write to :- E-Mail : thefolkloresociety@gmail.com

- 1 जंजीवार की लोक कथाएँ — 10 लोक कथाएँ — सामान्य छापा, मोटा छापा दोनों में उपलब्ध
- 2 इथियोपिया की लोक कथाएँ-1 — 45 लोक कथाएँ — सामान्य छापा, मोटा छापा दोनों में उपलब्ध

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हार्ड कापी में बाजार में उपलब्ध हैं।

To obtain them write to :- E-Mail drsapnag@yahoo.com

- 1 रैवन की लोक कथाएँ-1 — इन्द्रा पब्लिशिंग हाउस
- 2 इथियोपिया की लोक कथाएँ-1 — प्रभात प्रकाशन
- 3 इथियोपिया की लोक कथाएँ-2 — प्रभात प्रकाशन
- 4 शीबा की रानी मकेडा और राजा सोलोमन — प्रभात प्रकाशन
- 5 राजा सोलोमन — प्रभात प्रकाशन
- 6 बंगाल की लोक कथाएँ — नेशनल बुक ट्रस्ट

नीचे लिखी पुस्तकें रचनाकार डाट आर्ग पर मुफ्त उपलब्ध हैं जो टैक्स्ट टू स्पीच टेक्नोलोजी के द्वारा दृष्टिबाधित लोगों द्वारा भी पढ़ी जा सकती हैं।

- 1 इथियोपिया की लोक कथाएँ-1
<http://www.rachanakar.org/2017/08/1-27.html>
- 2 इथियोपिया की लोक कथाएँ-2
<http://www.rachanakar.org/2017/08/2-1.html>
- 3 रैवन की लोक कथाएँ-1
<http://www.rachanakar.org/2017/09/1-1.html>
- 4 रैवन की लोक कथाएँ-2
<http://www.rachanakar.org/2017/09/2-1.html>
- 5 रैवन की लोक कथाएँ-3
<http://www.rachanakar.org/2017/09/3-1-1.html>
- 6 इटली की लोक कथाएँ-1
http://www.rachanakar.org/2017/09/1-1_30.html

7 इटली की लोक कथाएँ-2

<http://www.rachanakar.org/2017/10/2-1.html>

8 इटली की लोक कथाएँ-3

<http://www.rachanakar.org/2017/10/3-1.html>

9 इटली की लोक कथाएँ-4

<http://www.rachanakar.org/2017/10/4-1.html>

10 इटली की लोक कथाएँ-5

<http://www.rachanakar.org/2017/10/5-1-italy-lokkatha-5-seb-wali-ladki.html>

11 इटली की लोक कथाएँ-6

<http://www.rachanakar.org/2017/11/6-1-italy-ki-lokkatha-billiyani.html>

12 इटली की लोक कथाएँ-7

<http://www.rachanakar.org/2017/11/7-1-italy-ki-lokkatha-kaitherine.html>

13 इटली की लोक कथाएँ-8

<http://www.rachanakar.org/2017/12/8-1-italy-ki-lokkatha-patthar-se-roti.html>

14 इटली की लोक कथाएँ-9

<http://www.rachanakar.org/2017/12/9-1-italy-ki-lok-katha-do-bahine.html>

15 इटली की लोक कथाएँ-10

<http://www.rachanakar.org/2017/12/10-1-italy-ki-lok-katha-teen-santre.html>

16 जंजीवार की लोक कथाएँ

http://www.rachanakar.org/2018/05/blog-post_54.html

17 चालाक ईकटोमी

http://www.rachanakar.org/2018/05/blog-post_88.html

18 नौस देशों की लोक कथाएँ-1

<http://www.rachanakar.org/2018/10/1.html>

नीचे लिखी पुस्तकें जुगरनौट डाट इन पर उपलब्ध हैं

<https://www.juggernaut.in/authors/2a174f5d78c04264af63d44ed9735596>

1 सोने की लीद करने वाला घोड़ा और अन्य अफ्रीकी लोक कथाएँ

2 असन्तुष्ट लड़की और अन्य अमेरिकी लोक कथाएँ

3 रैवन आग कैसे लेकर आया और अन्य अमेरिकी लोक कथाएँ

4 रैवन ने शादी की और अन्य अमेरिकी लोक कथाएँ

5 कौआ दिन लेकर आया और अन्य अमेरिकी लोक कथाएँ

Facebook Group

<https://www.facebook.com/groups/hindifolktales/?ref=bookmarks>

Updated on Dec 27, 2018

लेखिका के बारे में



सुषमा गुप्ता का जन्म उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ शहर में सन् 1943 में हुआ था। इन्होंने आगरा विश्वविद्यालय से समाज शास्त्र और अर्थ शास्त्र में एम ए किया और फिर मेरठ विश्वविद्यालय से बी एड किया। 1976 में ये नाइजीरिया चली गयीं। वहाँ इन्होंने यूनिवर्सिटी ऑफ़ इबादान से लाइब्रेरी साइन्स में एम एल एस किया और एक थियोलोजीकल कौलिज में 10 वर्षों तक लाइब्रेरियन का कार्य किया।

वहाँ से फिर ये इथियोपिया चली गयीं और वहाँ एडिस अबाबा यूनिवर्सिटी के इन्स्टीट्यूट ऑफ़ इथियोपियन स्टडीज़ की लाइब्रेरी में 3 साल कार्य किया। तत्पश्चात इनको दक्षिणी अफ्रीका के एक देश लिसोटी के विश्वविद्यालय में इन्स्टीट्यूट ऑफ़ सर्जन अफ्रीकन स्टडीज़ में 1 साल कार्य करने का अवसर मिला। वहाँ से 1993 में ये यू एस ए आ गयीं जहाँ इन्होंने फिर से मास्टर ऑफ़ लाइब्रेरी ऐंड इनफ़ॉर्मेशन साइन्स किया। फिर 4 साल ओटोमोटिव इन्डस्ट्री एक्शन ग्रुप के पुस्तकालय में कार्य किया।

1998 में इन्होंने सेवा निवृत्ति ले ली और अपनी एक वेब साइट बनायी - www.sushmajee.com। तब से ये उसी वेब साइट पर काम कर रही हैं। उस वेब साइट में हिन्दू धर्म के साथ साथ बच्चों के लिये भी काफी सामग्री है।

भिन्न भिन्न देशों में रहने से इनको अपने कार्यकाल में वहाँ की बहुत सारी लोक कथाओं को जानने का अवसर मिला - कुछ पढ़ने से, कुछ लोगों से सुनने से और कुछ ऐसे साधनों से जो केवल इन्हीं को उपलब्ध थे। उन सबको देख कर इनको ऐसा लगा कि ये लोक कथाएँ हिन्दी जानने वाले बच्चों और हिन्दी में रिसर्च करने वालों को तो कभी उपलब्ध ही नहीं हो पायेंगी - हिन्दी की तो बात ही अलग है अंग्रेजी में भी नहीं मिल पायेंगी।

इसलिये इन्होंने न्यूनतम हिन्दी पढ़ने वालों को ध्यान में रखते हुए उन लोक कथाओं को हिन्दी में लिखना प्रारम्भ किया। इन लोक कथाओं में अफ्रीका, एशिया और दक्षिणी अमेरिका के देशों की लोक कथाओं पर अधिक ध्यान दिया गया है पर उत्तरी अमेरिका और यूरोप के देशों की भी कुछ लोक कथाएँ सम्मिलित कर ली गयी हैं।

अभी तक 1200 से अधिक लोक कथाएँ हिन्दी में लिखी जा चुकी है। इनको “देश विदेश की लोक कथाएँ” क्रम में प्रकाशित करने का प्रयास किया जा रहा है। आशा है कि इस प्रकाशन के माध्यम से हम इन लोक कथाओं को जन जन तक पहुँचा सकेंगे।

विंडसर, कैनेडा

मई 2018